कार्यवाही विवरण

मेसर्स कालिंदी इस्पात प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–बेलपान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के Brownfield project or enhancing the production capacity of sponge iron from (2x100 TPD DRI)-60,000 TPA to Sponge Iron (6x100 TPD DRI)-2,00,000 TPA along with new set up of MS Billet-3,00,000 TPA and/or Rerolled Steel Product through Hot Charging-1,50,000 TPA and through Reheating Furnace-1,50,000 TPA; MS Black Pipe Mill- 1,40,000 TPA Galvanizing Plant-1,00,000 TPA, Captive Power Plant-20 MW (12 MW through WHRB and 8 MW through AFBC) and Fly Ash Bricks-69,300 TPA के पर्यावरणीय स्वीकृति बाबत् 27.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–खपरी स्थित प्राथमिक शाला मैदान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित लोकसुनवाई का कार्यवाही विवरण :–

भारत शासन पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली की ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14.09.2006 के प्रावधानों के अनुसार मेसर्स कालिंदी इस्पात प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–बेलपान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के Brownfield project or enhancing the production capacity of sponge iron from (2x100 TPD DRI)-60,000 TPA to Sponge Iron (6x100 TPD DRI)-2,00,000 TPA along with new set up of MS Billet-3,00,000 TPA and/or Rerolled Steel Product through Hot Charging-1,50,000 TPA and through Reheating Furnace-1,50,000 TPA; MS Black Pipe Mill- 1,40,000 TPA Galvanizing Plant-1,00,000 TPA, Captive Power Plant-20 MW (12 MW through WHRB and 8 MW through AFBC) and Fly Ash Bricks-69,300 TPA के पर्यावरणीय स्वीकृति के संबंध में लोक सुनवाई हेतु उद्योग के आवेदन के परिप्रेक्ष्य में स्थानीय समाचार पत्र दैनिक भास्कर, बिलासपुर में दिनांक 25.03.2022 तथा राष्ट्रीय समाचार पत्र बिजनस स्टैण्डर्ड, नई दिल्ली के मुख्य संस्करण में दिनांक 25.03.2022 को लोक सुनवाई संबंधी सूचना प्रकाशित करवाई गई थी। तद्नुसार लोक सुनवाई दिनांक 27.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–खपरी स्थित प्राथमिक शाला मैदान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित की गई। ई.आई.ए. अधिसूचना 14.09.2006 (यथा संशोधित) के प्रावधानों के अनुसार ड्राफ्ट ई.आई.ए. रिपोर्ट, कार्यपालक सार की प्रति (हिन्दी व अंग्रेजी) एवं इसकी सी.डी. (साफ्ट कापी) जन सामान्य के अवलोकन/पठन हेतु कार्यालय कलेक्टर बिलासपुर, कार्यालय मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत बिलासपुर, अनुविभागीय अधिकारी (रा0), कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) मस्तुरी, जिला–बिलासपुर, कार्यालय महाप्रबंधक, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बिलासपुर, क्षेत्रीय कार्यालय, क्षेत्रीय अधिकारी, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, व्यापार विहार पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पास, बिलासपुर, सरपंच/सचिव कार्यालय, ग्राम पंचायत कोकड़ी, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.), डायरेक्टर, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय, भारत सरकार, इंदिरा पर्यावरण भवन, वायु विंग,

जोरबाग रोड़, नई दिल्ली, मुख्य वन संरक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय (पश्चिम मध्य क्षेत्र), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भू–तल, पूर्व विंग, नया सचिवालय भवन, सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र) एवं मुख्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, पर्यावास भवन, नॉर्थ ब्लॉक, सेक्टर – 19, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर (छ.ग.) में रखी गई है। परियोजना के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां एवं आपत्तियां सूचना प्रकाशन जारी होने के दिनांक से 30 दिन के अंदर क्षेत्रीय कार्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर में मौखिक अथवा लिखित रूप से कार्यालयीन समय में प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया। इस दौरान लोक सुनवाई के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां/आपत्तियों के संबंध में इस कार्यालय को कोई भी पत्र प्राप्त नहीं हुआ हैं एवं कार्यालयीन समय में दिनांक 25/04/2022 को श्री पंकज खण्डेलवाल, शांति नगर बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई नस्ती का अवलोकन किया गया हैं।

लोक सुनवाई हेतु निर्धारित तिथि दिनांक 27.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–खपरी स्थित प्राथमिक शाला मैदान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित की गई। लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ की गई।

सर्वप्रथम श्री हरिस एस., मुख्य कार्यपालन अधिकारी, प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति के साथ डॉ. एम. पी. मिश्र, क्षेत्रीय अधिकारी, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर द्वारा भारत शासन, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14.09.2006 (यथा संशोधित) के परिपेक्ष्य में लोक सुनवाई के महत्व एवं प्रक्रिया के संबंध में विस्तृत जानकारी जनसामान्य को दी गई।

तत्पश्चात् परियोजना प्रस्तावक की ओर से श्री नरेश निषाद, एनाकॉन लेबेरेटरी, नागपुर के द्वारा मेसर्स कालिंदी इस्पात प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–बेलपान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) परियोजना के संबंध में संक्षिप्त जानकारी जनसामान्य को अवगत कराया गया।

प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को जनसुनवाई संबंधी विषय पर अपने सुझाव, आपत्ति, विचार, टीका–टिप्पणी मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया।

तत्पश्चात् उपस्थित लोगों ने मौखिक रूप से सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां दर्ज कराया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

1. **श्री दामोदर कांत, सभापति जनपद मस्तूरी, –** :–आज जन सुनवाई पर्यावरण स्वीकृति के लिए बेलपान, खपरी में जनसुनवाई रखा गया है। यहां उद्योग लगने से लोगों को रोजगार मिलेगा। और सीएसआर मद से गांव के छोटे–मोटे विकास कार्य होंगे। इससे हमारे गांव के जो स्थानीय लोग है उसको रोजगार के अवसर प्राप्त होगा। उद्योग स्थापित होने से लोगों को रोजगार के अवसर होगा, इसके लिए मैं अपना समर्थन व्यापित करता हूॅ।

2. **श्री राजेश साहू, ग्राम–मानिकचौरी** :– प्लांट के खुलने से धूल के कण के वजह से फसल काला–काला हो जाता है। इसके वजह से सोसायटी में भी नहीं लिया जाता। तीन चार बार हो गया बोला जाता है कि आपका धान काला है। साफ करके लाओं। साफ करने के बावजूद भी पाखड काला–काला है। प्लांट के पीछे का सारे जमीन है धान काला हो जाता है। उसके अलावा यहां से गुजरते है, भारी धूल कण आंख में घुसता है। ये यहां का बहुत बडा समस्या है। आसपास के 1 किलोमीटर की दूरी पर, तीन–चार बार हो गया सोसायटी में बोल दिया जाता है कि आपके फसल को नहीं लिया जायेगा। उस फसल को मजबूरी में हॉल में ही मजबूरी में 800–900 में बेचे है जो फसल का 2500 भाव चल रहा है अभी क्या करेंगे उस धान का अभी कम से कम हमारा 15–20 एकड़ जमीन है। पूरा काला पाखड हो जाता है क्या करेंगा धान का सोसायटी में बोलता है हम इस फसल को नहीं लेंगे। और कुछ नहीं है बाकी ठीक है। रोजगार ऐसा है गांव के युवा वर्ग है। रोजगार से वंचित कर दिया जाता है। हमारे गांव में मुश्किल से 20–22 से ज्यादा नहीं होंगे प्लांट में काम कर रहे है। उससे ज्यादा नहीं होंगे। यही सभी गांव से 25–25 होंगे, भैया 20–25 आदमी से ज्यादा नहीं है जो यहां काम करत हे। नुकसान कितने एरिया को होता है कम से कम 3 किलोमीटर तक का नुकसान होवत हे। सीधा–सीधा, मोर धान नहीं है नही ंतो ला के दिखा देतव। पाखड का मात्रा कितना है। पूरा काला पड जाता है धान।

3. **श्री मणीशंकर कौशिक,** :–मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूॅ ।

4. **श्री रामहरण साहू** :– मैं, जो नया प्रस्तावित प्लांट लग रहा है उसका मैं समर्थन करता हूॅ। इससे नया खुलने से गांव के युवा है उनको रोजगार मिलेगा।

5. **श्री गौतम नायक, ग्राम–मानिकचौरी** :– कालिंदी इस्पात हमारे जमीन स्तर पर खोला गया । जिस तरह से सभी बेरोजगार भईयों को रोजगार मिलना चाहिए। उस तरह से समुचित सुविधा नहीं मिल पा रहा है। कंपनी को पेड लगाना

चाहिए, स्वास्थ सुविधा मिलना चाहिए, मूलभूत सुविधा मिलना चाहिए। बिजली, पानी, सडक, ये सारे चीजों से कंपनी वंचित है। पूरी तरह से सुविधा जनक नहीं दे पा रही है और इसलिए मैं इस कंपनी का घोर विरोध करता हूॅ। हमारे यहां कई तरह के आईटीआई किये है ग्रेजुवेट किये है फिर भी जिस तरह से फायदा मिलना चाहिए, हमें कंपनी बैठाने से उस तरह से फायदा नहीं मिल पा रहा है और मैं तो ये कहना चाहता हूॅ इसी तरह से नाकामी रहेगी कंपनी का तो हम लोग घोर विरोध करेंगें आने वाले प्रोजेक्ट खोल रहे है उनका बैठाने नहीं देंगे। अगर हमारे भाईयों को रोजगार नहीं मिलेगा तो, जिस तरह से सड़क बन रहे है उनमें से आने वाले बाईपास रोड होते है। मैं देखा हूॅ छोटे–छोटे गलियों के लिए गिट्टी गिराकर, मुरूम गिराकर उनको रोड निकाल रहे है। टिकरी मोहल्ला के लिए। 3 फीट नीचे कंपनी के द्वारा अभी तक कुछ सहयोग मिल पाया है। वहां पर गिट्टी गिराने में मुरूम, गिराने में मैं रेड्डी सर से अपील करना चाहूॅगा कि वहां पर सड़क निकालने का सुविधा दे। उसी रास्ते से कंपनियों का आना–जाना लगा रहता है। फिर भी अभी वहां पर ध्यान नहीं दे रहे है। जिस तरह से कमलेश पटेल ठेकेदार है वो भी चुप्पी साध कर बैठे हुए है। उनको भी मैं अवगत कराना चाहता हूॅ कि उस रोड पर ध्यान देकर रोड लाईन निकाले।

6. **श्री फिरतूराम, ग्राम–बेलपान, खपरी** :– मेरे को एक बोर तालाब में चाहिए। कंटीन्यू कि डेली चलते रहे तालाब में। हम लोगों को नहाने के लिए पानी नही है। एक बोर चाहिए मरघटा में, श्मशान में जो मट्टी खोदने के लिए जाता है पानी के लिए गांव, में घर में आता है पानी के लिए। वहां पर एक हैण्डपंप लगाओं। एक बोर चाहिए तालाब में हमारे नहाने के लिए हम साफ बोल रहे है। नहाने के लिए चाहिए। जो मट्टी खोदने मरघटा में जाता है। उसके लिए हैण्डपंप चाहिए। आपका सहयोग है।

7. **श्री शिव प्रसाद, ग्राम–खपरी** :– अभी जो प्लांट खुला है, खुलने वाला है, नहीं खुला है। खुलने वाला है।

8. **श्री सुखनंद प्रसाद नेकी, ग्राम–खपरी** :– स्पंज आयरन कंपनी खुले हवय। ऐखर ग्राम पंचायत कोकडी के आश्रित ग्राम के अलावा कई अन्य गांव हवय जैसे कि देवपुरी, पतईडीह, मानिकचौरी, भटचौरा, हरदी, गोबरी, कोकड़ी, रहटाटोर अन्य ऐसे कई गांव है, जेकर जो प्रदूषण है दूर–दूर तक 200 कि.मी. तक पहुंचत हवय। ऐखर निवारण करे खातिर बर नजदीक मा स्पंज आयरन कंपनी है कुछ ध्यान नहीं देवत हवय, और ऐला ध्यान देबर ये जन समस्या निवारण करेबर

खातिर बर ऐला एक प्रकार के व्यापक्त प्राप्त करे हे। जतका भी दूर दराज से अधिकारी से मोर अनुग्रह है, निवेदन हवय कि स्पंज आयरन के जतका धुआं धक्कड हवय अपन ला बचाये के क्षमता रखय। क्षमता नहीं रखे के पॉवर ओला नहीं हे। ये कंपनी अपन आप ला कंपनी बचा करके स्वयं ला बंद करें।

9. **श्री अनिरूद्व प्रसाद मिश्रा** :– प्लांट खुलने में समर्थन है।

10. **श्री रामेश्वर कुमार जांगडे, ग्राम–मानिकचौरी** :– कालिंदी इस्पात की दूरी मेरे घर से 01 कि.मी. की दूरी पर है। इस प्लांट का धुआं लगातार मेरे घर में जाता है। पूरे छत में 1 इंच से 2 इंच डस्ट जमा हुआ है, साथ में नहाने का पानी है उसमें भी डस्ट जाता है। साथ ही सीएसआर मद कंपनी देता है, ये कुछ नहीं देते है। 2–3 सरपंच को पहुंचा देंगे। 10,000 व 20,000 दो तीन बार प्लांट भी गया हूॅ। मेरे को गेट से बाहर कर दिया साथ ही मैं रोजगार के लिए भी गया। आपको दो सेलरी या 20,000 देना पडेगा। ये प्लांट लगातार न इंसाफी कर रहा है साथ ही आसपास के जो बेराजगार लोग, इंजीनियर भी आसपास के लोग को रोजगार नहीं दिया जा रहा है साथ मे जो यूपी बिहार के अंडर में रहता है उसको बुलाकर काम कराया जा रहा है। आसपास को मानिकचौरी का ठेकेदार भी था मजदूर रखा है वो 10 साल होने के बावजूद भी सेलरी 6 से 7 हजार दिया जा रहा है। अगर विरोध करेगा तो उसको तुरंत नौकरी से बाहर कर देगा। सर, मनीष सर आपके प्लांट से बहुत समस्या है। खासकर जो हमारे 01 कि.मी. के दायरे में है। उसको दमा जैसे बीमारी गंजापन हो रहा है। लेकिन आप ने आसपास के गांव में निरीक्षण के लिए नहीं गया। इसका बार–बार भी जनप्रतिनिध और आसपास के जो युवक है आपके प्लांट बार–बार गया है लेकिन आपने लोगों की समस्याओं को नजर अंदाज किया साथ ही कुछ बोल देगा जनप्रतिनिध तो 2–4 पैसा भेजवा देते है। आज ही सरपंच लोग के पास राशि गया था। मेरे को भी सूचना मिला मैं भी पंचायत से हूॅ। इस कारण आसपास से कोई भी जनप्रतिनिध नहीं आया है। यहां तक के जिला जनता जो आये हे। सब बोलने से हिचकिचा रहे है। सब को पैसा पहुंच गया है उसके पास ठीक है सर, आपके द्वारा बहुत नइंसाफी किया जा रहा है।

11. **श्री नंदराम पटेल गोबरी** :– अगल–बगल जितने भी गांव है बहुत प्रभावित है। नदी में स्नान करने जाने पर पूरा काला–काला है, क्योकि डेम बन चुका है। पानी का बहाव नहीं है। इसलिए हम लोगों को नहाने में बहुत प्रॉबलम होता है। क्योंकि अगल–बगल गरीब किसान है। सभी के पास तो बोरवेल नहीं है, कि

अपने घर में नहायेंगे। दूसरा बात आज हमारे 50 के उमर में 20 साल हो गया है कालिंदी प्लांट को लगे रोड़ इतना जर्जर है। जो बन रहा है। हम क्षेत्र वालो को चलने फिरने को जो मौका मिलता है इसमें टेलर गाड़ी आता है क्षमता से ज्यादा माल लाया जाता है। रोड़ जर्जर हो जाता है इसलिए इसमें भी विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। जितना हमारा रोड़ का क्षमता इसमें हिसाब से वाहन में माल लाना चाहिए। क्योंकि आज हम 50 साल हो गया करही बाजार, पचपेढ़ी जाने में पैदल साईकिल चलने में दिक्कत होता है। किसी प्रकार से आज रोड़ बन रहा है। प्लांट के वजह से, माल उसमें ओव्हर हो जाता है, तो रोड़ का क्या दशा होगा और हमारे जितने गरीब भाई–बहन पढे लिखे है, कोकड़ी, गोबरी, रहटाटोर, भटचौरा, हरदी इतना पंचायत आता है। गिने चुने मजदूर 2–4 वहां पर, किसी गांव से 4 मजदूर वहां पर लिये है। इस तरह प्लांट खोलने से क्या फायदा है, इससे अच्छा है कि छत्तीसगढ़ के लोग ईटा भट्टा जाता है। उसमें कमाकर ले आते है और हमें लॉलीपॉप दिखाया जाता है कि हम प्लांट डाल रहे है बेरोजगारो को रोजी मिलेगा। ऐसा रोजी मिलेगा। पढ़े–लिखे हमारे बच्चे एम.ए, बी.ए. किये है, इंजीनियरिंग किये गये है। उनको डिग्री के आधार पर उनको काम दिया जाये। क्यो यू.पी. बिहार से लाये है हमारे छ.ग. में युवा साथी सब पढे लिखे है।

12. **श्री संत** :– मैं यहां अनंत मार्ग जनता के विषय में और विश्व की आर्थिक समस्यों का एकमात्र निदान अंनत मार्ग द्वारा पूरे विश्व में फैल रहा है। बहोत लोग नहीं जानते। इसलिए विरोध कर रहे है। विरोध करने की बात नहीं है, समाधान करने की बात है। अनंत मार्ग कहता है मन की तृप्ति के लिए सही अध्यात्म चाहिए। समाधान की बात है।

13. **श्री राजेन्द्र कुमार सिंह, मानिकचौरी** :– कालिंदी इस्पात से मेरा गांव लगभग आधा कि.मी. पर है। धुल और धुआं से डस्ट से पूरा गांव पट गया है और सांस लेना मुश्किल है धुआं से, डस्ट से रात भर में, गांव काला–काला हो जाता है, पूरा छप्पर भी काला–काला हो जाता है, पानी भी पीने लाईक नहीं रहता है। पास में कारखाना है, जो खेत में काला–काला जम गया है। धान भी काला –काला हो जाता है धान को बेचने में बहुत दिक्कत आता है। तो शासन से मेरा गुजारिश है कि कारखाना यहां नहीं लगना चाहिए और इसका विस्तार रोकना चाहिए। क्योंकि क्षमता से अधिक गाड़ी आता है, रोड़ का क्षमता नहीं है कि 40 टन, 50 टन तक क्षमता नहीं है। और रोड़ बनता है तो कुछ दिन में खत्म हो

जाता है। शासन से मेरा गुजारिश है कि इसमें विशेष ध्यान दिया जाये और इसके कारखाना के विस्तार को तुरंत रोका जाये।

14. **श्री मुकेश कुमार जायवाल, ग्राम–मानिकचौरी** :– ये कालिंदी इस्पात कंपनी जो विस्तार कर रही है। मै उसका समर्थन करता हूॅ। और ये चाहता हूॅ कंपनी आसपास के अशिक्षित बेरोजगार जो कंपनी विस्तार कर रहे है उसमें 70 प्रतिशत लोकल आदमी को रोजगार दें और आसपास के शिक्षा, स्वास्थ, जय ये सभी को ध्यान दें।

15. **श्री राजेश्वर, ग्राम–बेलपान खपरी** :– हमर गांव में कंपनी खुलही कहथे। हमन गाय गरवा ला कहां चराबो। और ये बगल मा खुलही कंपनी मन ला हमन कामा चलाबो गाय गरवा ला। हमर गांव के आदमी मन बुता करत रहीस हे। सब झन ला नौकरी देबो कहत रहीस हे। कालिंदी इस्पात वाला मन हा ये भैया मन हा मात्र तीन जगह नौकरी देहें नौकरी। अभी 2 रूपया के नौकरी करत हे। हमन खपरी, बेलपान के मन भट्ठा जा थे। ये मन हा 2 रूपया के नौकरी दे के कहत हे। और कंपनी खोलबो कहत हे। ऐसा मा कैसे बनही नई बने। हम कहत हन कि कंपनी एक ठीक खुले हवय। और एके ठीक ला खुलन दे, और हमला परेशानी है दूर करे। और चावल नहीं होवत हे धान नहीं होवत हे। धूल–धक्कड़ जम जावत हे, और घर मा, ऐती खेत मा जाथन, धूल धक्कड जम जावत हे। ये करे कंपनी, और अपन लगावय से सब चीज ला, मै ये कहना चाहत हव कंपनी वाला मन ला, हमन के यहां नई होवत हे। ऐसा मा गुंजाईस नई होवत हे। ऐसने हमन मर जाबो, हम ला कही दो रूपया के नौकरी करो हमन कहां कर सकबो। खेती किसानी नहीं छोड़ना है, किसान बेटा हमन, आने नहीं है, किसान के बेटा हन। 2 रूपया के नौकरी कहां कर सकबो हमन, और हमन ला कयही कि गुलामी कर, हमन गुलामी नहीं कर सकन।

16. **श्रीमती ललिता लहरे, मानिकचौरी** :– हम ला हमर खेत खार, जमीन मा, जियत खात रहेन तेमा ऐहा कंपनी खोले हे और जतका मोर लोग लईका रहिस, मोर आदमी रहिस ये सब नौकरी से निकाल दे हे। ऐ हा नौकरी मा लगावय, नहीं तो हमर खेत–खार ला वापस करे। हम नहीं जानन कछू ला, साफ बात। जितना लहरे परिवार में लईका हे, ये सब ला राखय। नही ंतो मोर खेत–खार ला आपस कर दे। मैं जिहो कहां, मैं जिहो कामा, मोर नान–नान, नोनी, बाबू ला कामा पोसीयों। क्या करबो हमन। हाथ मा हथियार कहां काटव हथियार, सियान मर कहे हे, मोर लोग लईका जतना, लहरे परिवार ला नौकरी मा राखे, नहीं तो मोर

खेत ला छोड़ दे। मै साहब से बिनती करथव, और सभी भाई–बहनी मन सुन लेवा। ये सही है कि लबारी हे, सब गवाह रयहा। पढे लिखे नहीं हव।

17. **श्री रामलाल केंवट, ग्राम–रहटाटोर** :– ये कंपनी से हमला कोई फायदा नहीं हे। फायदा कौन ला हे, कंपनी वाला है। फायदा कौन ला हे बिहार वाला ला, फायदा कौन ला हे यूपी वाला ला, हमन किसान मन ला कोई फायदा नहीं है।

18. **श्री भरतलाल पोर्ते, ग्राम–रहटाटोर** :– पर्यावरण ला बचाये के खातिर हमन जो जल, जंगल, जमीन हे। ऐखर आज प्रदूषण बढत हे। ऐखर सेती हमन ये प्रयास करथन। लेकिन अभी वर्तमान भविष्य ला देखते हुए ये कंपनी कालिंदी इस्पात या चाहे जो भी कंपनी हो, अगर कंपनी बढते तो वहां पर्यावरण प्रदूषण होना निश्चित है। जल, वायु, मृदा, ताप से प्रदूषण होते। आज हमन ऐसे भी कल युग के अनेक प्रकार से बहुत केमिकल वाला प्रदार्थ खावत हे। ऐसे भी कम हो चुके हे। पर्यावरण प्रदूषण बढ़ही तो हमर जिंदगी और एकदम घट जायही। आने वाला समय, आने वाला नस्ल, आने वाला पीढी बहुत कमजोर होही। ये पर्यावरण प्रदूषण ऐसे केमिकल, धुआं के चलते आप 10 कि.मी., 12 कि.मी. के एरिया हे, जो मृदा हे, तापमान हे, जो हवा हे, वायु मंडल पूरा प्रभावित होवत हे। ओखर सेती मैं ज्यादा कहने नही चाहत हव। इतना कहना चाहत हव कि कंपनी खुले मा जो हमर रोजगार साथी हे ओला कोई भी फायदा नहीं हे। कोई फायदा नहीं दिये जाते। जतका भी जो इंजीनियरिंग स्थानीय लोग हमर यहां कम पढे–लिखे होते, है। बेरोजगार हमर यहां हे, कम पढे–लिखे। कम पढे–लिखे के कारण कंपनी मा हमला जगह नहीं मिले। हमन 10 वीं 12 वीं करे हे। हमला अच्छा जगह नई मिल पावत हे। कंपनी बने कोई सा भी कंपनी हो, हमर ग्रामीण ला फायदा नहीं हो सके। काबर ओ तो बाहर से बिहार से लाईही। रांची से लायही। क्या फायदा होही, हमला। केवल कहते हमला रोजगार मिलही, रोजगार नई मिल सके, अगर मिल जायही तो दो महिना के बाद कोई भी कारण से हमला बाहर निकाल दे सकत हे। अभी ये मेर देखा जाये ये टेंट कतका मा आये हे, बता। ये टेंट हम स्थानीय लगाते तो ये टेंट, जो बाजा वाला भाई हे, जेकर सो टेंट हाऊस ला कुछ फायदा होतीस। अतका कार्यक्रम मा टेंट कहां से आये हे, कतका मा आये हे, बता। तो हमला कोई फायदा होईस हे, बता। क्या फायदा होईस हे, टेंट तो हमू भी लगा सकत हन। वो पैसा हमर मन ला बचतिस। हमर छत्तीसगढ़ में हीरा है खदान है। लेकिन हमर उपयोग नहीं कर पाथन। सबसे बडी कारण क्या है एकता, हमन मजदूर अगर काम करना बंद कर देही, जतका

उद्योगपति हे, बडा आदमी है, कंपनी उद्योगपति, ऐखर बिस्तर गोल हो जाएही। हमन मा एकता होना चाहिए। हमन एकता रहबो कोई भी कंपनी खुली चाहत थन, तो खोल सकत हे, चाहत थन, तो नहीं खुल सकय। यूनिटी, यूनियन कंपनी ला बंद कर सकत थन। केवल हमला एकता चाहे। हमन जब तक एकता नहीं हे चिल्ला–चिल्ला के कंपनी खुलही, और खुले के बाद भी हमन ला कोई फायदा नहीं हो सकय।

19. **श्री हेतराम जांगडे, सरपंच ग्राम पंचायत कोकडी** :– आज हमारे खपरी बेलपान में विगत 18 वर्षो से संचालित हो रही है। मेसर्स कालिंदी प्राईवेट लिमिटेड, बेलपान, जो कि अपना विस्तार वर्तमान से तीन गुना अधिक करने जा रहे है। साथ–साथ पॉवर प्लांट व अन्य प्लांट को प्रोजेक्ट तैयार किया जा रहा है। कालिंदी इस्पात कंपनी के एम.डी. साहब को आज मंच के माध्यम से आपके संचालन में प्रकाश डालना चाहेंगे। आपके संचालन में बहुत ही कमियां नजर आ रही है। आपका यह कंपनी का मैनेजिंग सिस्टम पूरी तरीके से फ्लाप रही, पूरे क्षेत्र में प्रदूषण का मारा–मारी रहा। लोगों को रोजगार के लिए तरसना पड़ा, इन सब चीजों के बाद भी। इस क्षेत्र के जनता का बड़कपन देखिये, आपको उद्योग स्थापित करने के लिए समर्थन दे रहे है। आपको इस मंच के माध्यम से यह हिदायत देना चाहेंगे कि पिछली बार की तरह इस बार आने वाले समय में संभागीय क्षेत्र के लोगों को अनदेखा न करें और क्षेत्रीय लागों को बस साथ लेकर चले। हमारा क्षेत्र बहुत ही पिछड़ा क्षेत्र है। वे साफ–साफ सीधे–साधे लोग है। आपसे पुनः आग्रह करते है कि हम हमारी बातों को आप गंभीरता से लेते हुए कंपनी का संचालन किजीये गा, एवं उद्योग नीति 2020 से 2024 तक के कड़ाई से पालन करते हुए। ईएसपी का उपयोग कर क्षेत्र को प्रदूषण रहित कार्य कीजिये गा। हमारे गांव के तरफ से कुछ मांगे की गई है। अगर ये मांग पूरी हो जाती है। तो समर्थन में है। हम लोग का 06 सूत्रीय मांग है कि ग्राम पंचायत कोकडी के आश्रित ग्राम–खपरी, बेलपान को शिवनाथ नदी से एरीकेशन बारामासी सिंचाई उपलब्ध कराई जाये। ग्राम पंचायत कोकड़ी एवं आश्रित ग्राम पंचायत खपरी–बेलपान को कंपनी के द्वारा गोद नामा लिया जाये, और सभी सुख–दुख में भागीदारी निभाई जाये। शासन के उद्योग नीति का पूर्णतः पालन किया जाये। जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, रोजगार की सुविधा उपलब्ध कराई जाये। स्थानीय योग्य बेराजगारो को रोजगार दिया जाये। कोई भी नया औद्योगिक इकाई के रूप में प्लास्टिक कंपनी जैसे हानिकारक का प्लांट का स्थापना नहीं होना चाहिए। जिससे भारी प्रदूषण होता है। आपके द्वारा संचालित औद्योगिक प्लांट प्रदूषण रहित होना चाहिए। ईएसपी का पूर्णतः सही उपयोग

होना चाहिए। यदि आपके प्लांट द्वारा प्रदूषण से किसानों को, फसलो को, हानि या क्षति, होती है तो उसका क्षतिपूर्ति मुआवजा दिया जाये। अतः उपरोक्त सभी जायज मांगों को आपकी कंपनी, अच्छा अनुसार पालन एवं पूरा करती है, तब हम आपके कंपनी को समर्थन करने के लिए तैयार होंगे।

20. **श्री तीजराम रजक, ग्राम–कोकडी, वार्ड क्रं.–10 पंच** :– जेन मोर जमीन खपरी–बेलपान मेर हे, कंपनी मा लगे हे। ये कालिंदी इस्पात का तर्जुबा मैं सन् 2006 से 2022 तक देखत हव। जो मोर जमीन से लेकर पूरा गांव ला, पूरा आसपास ला बर्बाद करत हे। ऐमा मैं सहमत नहीं हव। विरोध मतलब विरोध। एक कोरी नई बना सकय, कंपनी नई चला सकय।

21. **श्री चितराम निषाद, ग्राम–खपरी बेलपान, पूर्व पंच** :–ये प्लांट वाले जतका हमन मांग करे हे 4–5 ठोक, खरे जी से मैं पूछना चाहत हव। कि पूर्व के तरह ये दारी भी गोल मटोल थोडी करही। काबर मैं पूर्व पंच रहव तो ये प्लांट लगे रहीस हे। वो दिन बैठे के बाद में बोल दीस हे कि हा–हा हम पंचायत क्षेत्र के जतका वर्कर हे योग्यता के हिसाब से लेबो बोलीस हे। वोमा गिने चुने आदमी ला लेईस। ओखर बार कोई भी फंगसन में इन्वाईट करे बर बोले रहिस हे, ओला भी नई करीस। ऐसे–ऐसे कई ठोक गलत करत जावथे। मोर कहना है हमन मांग रखे हे 06 ठोक ऐला सही और सुचारू रूप से चलाही, तब तो ठीक हे, ऐमा मांग है कि शिवनाथ नदी से लिपट एरीकेशन सिंचाई सुविधा। हमर मेन मुद्दा है ऐखा ध्यान आर्कषित करना चाहत हव, पिछले बार की तरह, फिर गोल–मटोल मत करही।

22. **श्री दिलीप अग्रवाल, आमआदमी पार्टी, बिलासपुर** :– कंपनी के डायरेक्टर कालिंदी इस्पात संयंत्र के इनसे हम पूछना चाह रहे है कि इनसे पूर्ववत ये उद्योग स्थापित किया है। क्या ये उस पर नियमों का पालन कर रहे है पहला, दूसरा सबसे बडी बात है कि मस्तूरी विधानसभा का जो ये क्षेत्र है, ये सूखा ग्रसित क्षेत्र है। यहां पर किसी एक प्रकार से किसान जुआ खेलता है, एक प्रकार से, पलायन भी होता है लगातार, मस्तूरी क्षेत्र से बहुत सारे किसान बन्धु लगातार अन्य राज्यों के लिए पलायन करते है। है। क्या ये 30 प्रतिशत रोजगार दिया जाता हे। क्षेत्र में क्या ये दे रहे है? या नहीं दे रहे है तो क्यों नहीं दे रहे है? मेरा सवाल है ये, दूसरी बात प्रदूषण के रोकथाम के लिए इनके पास क्या विकल्प है। तीसरी बात यहां पर अकसर देखा जाता है। जन सुनवाई में सारी

शर्तो को मान लिया जाता है, उसके बाद उन शर्तो का पालन नहीं किया जाता है। तो हम ये बताना चाहते है कालिंदी इस्पात संयंत्र को, कि अगर आप को आज अनुमति प्राप्त हो जायेगी, जब तक ग्राम पंचायत की एनओसी प्रदान नहीं होगी, तब तक इस प्रकार जनसुनवाई नहीं रखी जाती है। तो ये ग्राम पंचायत की एनओसी प्रदान की है अनापत्ति प्रमाण पत्र कुछ देख कर ही किया होगा। कुछ अच्छा लगा होगा तो किये होंगे। बस सवाल ये आता है आप जब पूर्ववत प्लांट चला रहे है, क्या उसके नियमों का पालन कर रहे है, यदि नियमों का पालन कर रहे है, तो क्षेत्र के निवासी कही न कही रोजगार के लिए भटक रहे है, 30 प्रतिशत का हर जगह, हर क्षेत्र में नियम है, किसी भी राज्य में, किसी भी क्षेत्र में, कोई भी प्लांट खुलता है तो उस पर क्षेत्रीय निवासियों को उनकी योग्यता के अनुसार आपको काम देना है। चूंकि मस्तूरी का ये बेल्ट पूरी तरह ड्राई है। लगातार सुखा की समस्या आती है। चूंकि प्लांट लगने के बाद वो स्थिति और हलाहल हो जायेगी, तो मैं कालिंदी इस्पात के डायरेक्टर से पूछना चाह रहा हूँ कि, पूर्व में प्लांट खुला हुआ है। कितने लोगों को रोजगार दिये है, और आज ये विस्तार बढायेंगे तो कितनों लोगों को रोजगार देंगे, लिखित में दस्तावेज में, कितने लोग स्थानीय लोगों को रोजगार दिये हो, आने वाले समय में कितने स्थानीय लोगों को रोजगार देंगे, चूंकि प्लांट खुलने के बाद भी आम आदमी पार्टी जनमानस क्षेत्र को लेकर खडे रहेगी और ये स्थानीय निवासियों के लिए हम रोजगार की मांग करेंगे। रही बात प्रदूषण की तो प्रदूषण हम लगातार देख रहे है। आज भी हम क्षेत्र में घूम रहे है, ये प्रदूषण तो आपके प्लांट से दिख रहा है। दूर–दूर तक दिख रहा है, इस पर आप क्या कार्य करेंगे। इसकी भी जानकारी आम ग्रामीणों को दीजिए, जनप्रतिनिधि को दीजिए, क्योकि डेवलपमेंट के विरोधी हम नहीं है। अक्सर हमारे बारे में कहा जाता है कि हम जहां–जहां बात को रखते है, आम आदमी पार्टी के नेता डेवलपमेंट के विरोधी है, हम शिक्षित लोग है, अशिक्षित लोग नहीं है, हम डेवलपमेंट के विरोधी नहीं है, डेवलपमेंट के साथ जो प्रदूषण आयेगा। उसकी लिए क्या खास, क्या इंतजाम किया है, इसका जवाब दें। नहीं खुलना है, बोलना कोई समर्थन, असमर्थन नहीं है। डेवलपमेंट नहीं होगा तो विकास संभव नहीं है। डेवलपमेंट के साथ यदि प्रदूषण से हमारे क्षेत्र के ग्रामीणों को कही न कही स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों का सामना करना पड़ेगा और यहां पे पशु–पक्षियों को भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पडेगा। जैसा कि मैं पूर्वत बोलते आ रहा हूँ, कि ये क्षेत्र ड्राई क्षेत्र है लगातार यहां बिलासपुर के क्षेत्र में 5–10 क्षेत्र में अक्सर सूखा पड़ता है, और पलायन के लिए जनता मजबूर होती है। उनके लिए कालिंदी संयंत्र के पास क्या व्यवस्था हैं कितने लोगों को रोजगार देंगे, लिखित में जवाब दें। तो हम

मानेंगे कि आप वास्तविक में क्षेत्र के जनता के हित में प्लांट बैठा रहे है। आज आप की जन सुनवाई पारित भी हो जायेगी। निश्चित भी प्लांट खुल भी जायेगा, पर क्या क्षेत्र की जनता हमारे साथ रही होगी, रोजगार नहीं मिलेगा तो। हम जनता से पूछना चाहेंगे क्या आप खड़े होंगे। यदि खडे होंगे तो हम आपके साथ जुडे हुए है। आप एक जुटता से खड़े होंगे। तो रूकेगा, कि पूर्व प्रदूषण के लिए आप क्या उपाय करेंगे और नया विस्तार के लिए आपके पास क्या उपाए है, कृपया इसका लिखित दस्तावेज जवाब दीजिए। हम डेवलपमेंट के विरोधी नहीं है। डेवलपमेंट नहीं होगा, तो रोजगार नहीं होगा। डेवलपमेंट से हमको प्रदूषण देता है, बीमारी देता है, ऐसा डेवलपमेंट नहीं होना चाहिए और ये शर्तो के मानती है तो हम डेवलपमेंट के साथ है, पर प्रदूषण बढ़ता है, तो हम डेवलपमेंट के साथ नहीं है, डेवलपमेंट नहीं चाहिए, छत्तीसगढ के अंदर में 22 साल में जो डेवलपमेंट हुआ है, उसका हम स्वागत करते है, लेकिन प्रदूषण बढ़ा है, उसका हम विरोध भी करते है, छत्तीसगढ में प्रचुर मात्रा में आज प्रदूषण बढ़ा हुआ है, क्योंकि ये उद्योगपति सीएसआर मद के लिए पैसा देता है, लेकिन यहां की सरकार उस पैसों को क्या करती है, ये नहीं चाहते, ये हो इनका नुकसान हो, लेकिन सरकार सीएसआर मद को खा जाती है, इसको आपको याद रखना है, आप पूछिये सीएसआर मद से आपके क्षेत्र का विकास क्यों नहीं हुआ, वो पैसा गया तो, गया कहां गया। ये आपका सवाल है वाजिब सवाल है। विरोध करना हमारा मकसद नहीं है, सीएसआर का मद हमारे क्षेत्र का मद है, हमारे क्षेत्र में उद्योग लगा है उस सीएसआर की राशि इस प्रकार 20 साल हो गया, तो सीएसआर का मद कहां गया और कितना विकास हुआ, ये कंपनी देते है पैसा बकायदा कलेक्टेट को, सीएसआर का मद दिया जाता है, लेकिन आपका क्षेत्र के प्रतिनिधी उस पैसा का क्या करते है, जवाब उनसे किजिऐ। ये प्रॉपर पैसा देते है, वो भी इनका पैसा कट के जाता है, मैं कंपनी के पक्ष में नहीं हूॅ। सिस्टम है हम उसके विरोध में खडे हुए है। यदि ग्रामीण साथ देंगे तो आगे और भी 30 प्रतिशत लोग को जॉब देगी, नहीं देगी, तो हम खडे है आपके साथ में। हम कंपनी के पक्ष में नहीं है। फिर बोल रहे है। प्रदूषण नहीं फैलना चाहिए। कैसे रोकेंगे, ये डायरेक्टर महोदय बताये।

23. **श्री परमेश्वर यादव, ग्राम–कोकडी** :– जिस समय कंपनी का यहां स्टाट हुआ था। मैं बिलासपुर में रहता हूॅ। मेरे को यहां मुशी के काम के लिए नौकरी दिया गया। 35 रूपये की तनखा में मै काम किया और जब बिलासपुर को छोड के आ चुका था। उस समय मैं यहां 3 साल तक यहां काम किया। पूरा बाउण्ड्री, खोदाई सब। ठीक जब कंपनी चालू हो गया। तो हम को धोखा देकर भगा

दिया। हमारे साथ गुजर चुका है। फिर वही गुजरने वाला है। आप रजिस्टर मंगवाकर देख सकते है। मेरा नाम परमेश्वर यादव है। मैं मुंशी के तौर पर वहां काम किया हूॅ। जो बाण्ड्री उठाया हूॅ, मैं बिलासपुर को छोडकर आया हूॅ कि मेरे को कंपनी दर्जा देगा। लेकिन मैं कंपनी के पास गया हूॅ दुबारा। लेकिन कंपनी में कौन परमेश्वर हम नहीं जानते।

24. **श्री छबि कुमार, ग्राम–खपरी, बेलपान** :–मोर कहना इतना हे, बडे कन, बीमारी आये, रहीस हे, चीन से। ओमा से सरकार हमला कैसेनो करके बचा लिस, और ये फैक्टी के धुआं से सरकार भी नहीं बचा सकये। हममन विरोध करथन। कि कंपनी नहीं होना। हम विरोध पार्टी हन।

25. **श्री मान सिंह ध्रुव, ग्राम–खपरी, बेलपान** :– हम लोग का 06 सूत्रीय मांग है, कि ग्राम पंचायत कोकड़ी के आश्रित ग्राम–खपरी, बेलपान को शिवनाथ नदी से एरीगेशन बारामासी सिंचाई उपलब्ध कराई जाय। ग्राम पंचायत कोकड़ी एवं आश्रित ग्राम पंचायत खपरी–बेलपान को कंपनी के द्वारा गोदनामा लिया जाय, और सभी सुख–दुख में भागीदारी निभाई जाय। शासन के उद्योग नीति का पूर्णतः पालन किया जाय। जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, रोजगार की सुविधा उपलब्ध कराई जाय। स्थानीय योग्य बेराजगारो को रोजगार दिया जाय। कोई भी नया औद्योगिक इकाई के रूप में प्लास्टिक कंपनी जैसे हानिकारक प्लांट का स्थापना नहीं होना चाहिए। जिससे भारी प्रदूषण होता है। आपके द्वारा संचालित औद्योगिक प्लांट प्रदूषण रहित होना चाहिए। ईएसपी का पूर्णतः सही उपयोग होना चाहिए। यदि आपके प्लांट द्वारा प्रदूषण से किसानों के, फसलो को, हानि या क्षति, होती है तो उसका क्षतिपूर्ति मुआवजा दिया जाय। अतः उपरोक्त सभी जायज मांगों को आपकी कंपनी, अच्छा अनुसार पालन एवं पूरा करती है तब, हम आपके कंपनी को समर्थन करेंगे, अन्यथा नहीं करेंगे। खरे साहब है, ये सबको अभी हमको तत्काल बताये। ताकि आने वाले भविष्य में ये लोग क्या करेंगे, लिखित में चाहिए ये सब चीज। तभी तो कंपनी का समर्थन करेंगे। अन्यथा नहीं करेंगे। अभी तत्काल के तत्काल, आगे का बाद में चलायेंगे। नही ंतो हम अभी विरोध करना चालू कर देंगे। इसको अभी ये लिखित में चाहिए ये।

26. **श्रीमती संतोषी ध्रुव, ग्राम–खपरी** :– मैं यहां 2005 से देखते आ रही हूॅ इतना प्रदूषण यहां फैला है। जो अभी तक कुछ हुआ ही नहीं। मैं चाहती हूॅ कि यहां

फैक्ट्री नहीं बने। बेलपान में लगा है वहां पानी की कोई सुविधा नहीं है और फैक्ट्री बन जायेगी तो इसलिए यहां, फैक्ट्री यहां नही बनना चाहिए।

27. **श्री रामनाथ जीतपुरे, ग्राम–विद्याडीह टांगर** :–यहां विरोध करने वाला कम ही आदमी दिखत हे, समर्थन वाला ज्याद दिखत हे, समर्थन करने वाला और विरोध करने वाला ला, पहचान के बारे में बताने आये हव, ठीक उसी प्रकार से जिसका हिसाब हो चुका है, वो आकर के बोल ही नहीं सकते। कंपनी के विरोध में, पहचान सकते हो आकर, कौन आदमी कैसा है, पहचान सकते हो। इतना बताया समझ में आया। देखा जाये कंपनी वाले गांव में आते तो, इतना गांव को गोदीनामा लेयथ। कुछ भी व्यवस्था करे दे, दिखावा करथे। फोटोग्राफी बाहर भेजे बर। गोदीनामा, नहीं लेते भाई साहब, लोग गुलाम बनाथे, गुलाम भैया। 4–6 गांव ला गुलाम बनाथे, और आकर 2–4 आदमी ला पकड़ लेथे। ओला अच्छा से अपन दिमाग में सोचा, गुलाम बनाथे, और इस तरह से कंपनी स्थापित करके दिखावा करके, अपन स्थापना कर लेथे। कुछ नहीं करथे। नौकरी दिये के बाद भी निकाल दिये जाथे। कंपनी योग्यता वाला ला क्या–क्या, योग्यता वाला रखना चाहते, बताईये। योग्यता, क्वालीफीकेशन बताईये, एक्सपीरियेंश बताईये, यदि हमारे पास नहीं है, जो भी गांव है, तो दूसरे गांव से लेना चाहिए, नहीं है तो विदेश से मंगा लो। यदि हमारे में योग्यता है, तो हमें लेना चाहिए। जब लेंगे तो हम कंपनी को खोलेंगे, नही ंतो विरोध करते है। आश्वासन से काम नहीं चलेगा। मैं तो कंपनी का विरोध करता हूॅ। कुछ काम नहीं करते है इसलिए, विरोध करने के लिए आये है। मेरा परिचय थोड़ा सा अधूरा हो गया है और पार्टी विशेष पर नहीं होना चाहिए, बात। हम लोग पार्टी विशेष के आदमी है, कि नहीं यहां। भाजपा का कितने झन वोट देहा, कांग्रेस ला कितने झन वोट देहा। कांग्रेस और भाजपा में समर्थन दिलाना चाहिए ना। जेला जिताये है ओला समर्थन में आना चाहिए। आना चाहिए, नई आना चाहिए तो बदलो। बदलना चाहिए, परिवर्तन लाना चाहिए। फैक्ट्री ला परिवर्तन कर रहे है ना आप लोग भी परिवर्तन करो। फैक्ट्री नहीं खुलना चाहिए। जब तक जनता के समर्थन न मिले तब तक। मैं आम आदमी पार्टी का जिला उपाध्यक्ष हूॅ।

28. **श्री सुखसागर, ग्राम–रैलहा** :– कालिंदी स्पंज आयरन सन् 2006 से यहां स्थापित हुआ है, तब से पर्यावरण प्रदूषण के लिए इन्होंने क्या–क्या काम किये, कितने पौधे लगाये, और पौधे लगाये, जब से, क्या लगा, क्या नहीं लगा। आप लोग जानते है। इसी वर्ष का बात है मानिकचौरी का 2–3 किसान थे जो अपना धान लेकर गये थे। यही मानकिचौरी सोसायटी में लेकर गये थे। वहां जो सेल्समेन

लोग होते है, सोसायटी का मेन प्रबंधक होते है, वो उनके धान को नहीं ले रहा था। उसके धान को नहीं ले रहा था, मेरी सच्ची घटना मेरे सामने की घटना है, हमारे धान को क्यों नहीं ले रहे हो, वो बोर रहे थे आपका धान काला पड़ गया है, काला धान को कैसे लेंगे भाई, काला इसीलिए पड़ा था आसपास के क्षेत्र में किसान ही है, किसान लोग धान की फसल ही पैदा करेंगे, छत्तीसगढ़ में। किसान आदमी उसका धान है। धान प्रभावित हो रहा है, तो कैसे करेगा वो। इसके लिए स्पंज आयरन को सोचना चाहिए। कई ऐसी और समस्या है। हमारे लहरे परिवार की एक महिला बोली है। उनके तरफ से मैं समस्या को अच्छी तरह से बताना चाहूँगा। क्योंकि साटकट में बताई थी। सन् 2006 में स्थापित हुआ। 2008 में इनका जो जमीन है, ये सारे लोग के जमीन को तिरूपति बिल्डर बिल्डकॉन प्रा0 लि0 कंपनी आई, इनके द्वारा खरीदा गया था, बेलपान के जमीन को। इसके बाद उनसे एक इकरारनामा निष्पादित कराया गया। श्रीमान खरे जी के द्वारा लिखित में दिया गया है। इसमें इनको मुआवजा 65,000 प्रतिएकड की दर से 30 एकड़ के दर से दिया गया था और इनके वादा किया गया था कि इनके परिवार को हम काम में रखेंगे, कहां गया था, और परिवार के जितने भी व्यस्क सदस्य है उनको रखेंगे, कहा गया था। अभी तक से 4–5 लोग को रखा गया और भी 2–3 लोग मतलब 6–7 लोगों को रखा गया। उनको बीच में किसी कारण वश निकाल दिया गया। ऐसा नहीं होना चाहिए। मान लो, ये स्थापित है और इसके तीन गुना भी क्षमता वाले फैक्ट्रीयां यहां पर आयेंगे। उसकी भी स्थिति क्या होगी। पालुशन की स्थिति क्या होगी। किसान आसपास का धान उत्पादन कर रहा है वो भी चला जायेगा। सही करना चाहिए। मैं इसका विरोध करता हूँ। वास्तविक में लिखित में दे, क्षेत्र के लोगों को प्राथमिकता दे। हमारे आसपास के जितने भी सरपंच महोदय है, मैं उनसे भी निवेदन करता हूँ कि आप लोग भी जनप्रतिनिधि होते है, आपकी क्या स्थिति है। फैक्ट्री से क्या फायदा है, क्या घाटा है, इसके बारे में आप लोग बताईय, आईये। आप लोग चुप क्यो है? ये मुझे नहीं मालूम, ये संदेह का दायरा बन रहा है। आप लोग बताईये, क्या–क्या हानि हो रहा है क्या–क्या परेशानी हो रहा है। तो मैं ज्यादा लंबा नहीं बोलूंगा, क्योकि बहुत सारे जनता आये है। आप लोग को हिंट कर रहा हूँ आप लोग आकर के, मैं खुद आया था एक–दो बार हम लोग कार्यक्रम कराते है। मैंने साल में एक–दो कार्यक्रम कराते है। शायद तक के यहां बैठे है यहां के अधिकारी महोदय स्पंज आयरन से, उनसे मैं कुछ राशि दे दीजिये साहब, कुछ निवेदन करने आये है। 2000 से उस पार पिछले 3 साल में उस पार के नहीं देते है। हम लोग को उम्मीद रहता है भाई चलो साल में एक बार कार्यक्रम करा रहे है कुछ अच्छा राशि दे दे। 2000 के लायक है, हम लोग, इस क्षेत्र के लोग,

इस गांव के लोग, कार्यक्रम में 2000 के लायक है। ये तो स्थिति है, फिर से तीन गुना इण्डस्ट्रीज स्थापित करेंगे। तो क्या अभी का वादा है उसको पूरा नही कर पा रहे है। अभी लोगों को, सुविधा नहीं दे पा रहे है, तो बाद में क्या देंगें, तो केवल ढकोसले नहीं होना चाहिए। जनता को सही उपयोग कर रहे है, उनके खेत, खलिहानो, जमीन को यदि आप अधिग्रहण कर रहे है। उनको सही दिशा से उनको मुआवजा दिया जाये। उनके परिवार है, उसको नौकरी पेशा में रखा जाये। भाई वो जिसके लाईक है मजदूर वर्ग के है तो मजदूर वर्ग के काम दिया जाये। आप किसी भी परिवार को नहीं दे रहे है। ये नहीं कि आप किसी भी परिवार को नहीं दे रहे है। बेचारा क्या खायेंगा कि कैसे जियेगा। यदि उसके जमीन को पूरा हडप लेंगे तो। इसके लिए मै तीन गुना फिर से आप उत्पादन वाला फैक्ट्री स्थापित करने जा रहे है। उसके लिए सोचने वाली बात है उसके लिए मैं पुरजोर विरोध करता हूॅ। पहले पुराना वादा को आप अपना निभाईये।

29. **श्री रवि शुक्ला, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस इंटक, बिलासपुर** :—मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि स्थानीय लोगों को 90 प्रतिशत रोजगार मिलना चाहिए। फैक्ट्री आप लगाईये, इसमें कोई दिक्कत नहीं है, न जल स्तर घटना चाहिए, न किसी प्रकार का प्रदूषण होना चाहिए, मैं कहना चाहूंगा कि, फैक्ट्री लगाने से यहां पर जो जमीने अनुपजाऊ होंगी और जिस प्रकार के नुकसान लोकल लोगों को रोजगार का होगा। उसकी भी जिम्मेदारी आपको लेनी पडेगी। सारी चीजों की जवाबदारी आपकी होगी। सारी चीजे सही होने के बाद भी आपका चलता है कोई दिक्कत नही, लोकल 90 प्रतिशत लोगों को रोजगार मिलना चाहिए। जल स्तर नहीं गिरना चाहिए। आपसे आग्रह करना चाहूंगा, कि किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न होने से कंपनी जिम्मेदारी होगी। फैक्ट्री लगती है तो सारी चीजे ठीक रही तो।

30. **श्री हरीशचंद्र गुप्ता, ग्रात—गाड़ा** :— सरकार क्या कहती है, सरकार कहती है कि हम फैक्टरी बनायेंगे, उद्योग खोलेंगे। लेकिन सबसे बड़ा सवाल कि, उसका हम खामियाजा हम क्या दे रहे है, हम क्या दे रहे, ये सबसे बड़ा सवाल। जो हम लोगों को सोचना होगा। भारत के 80 प्रतिशत जनसंख्या आज किसान है। आज वो अपना जीवन—यापन कर रहा है। ये सबसे बड़ा सवाल, कि छत्तीसगढ़ की 76 प्रतिशत जनसंख्या, आज पर भी कृषि पर डिपेंट है। शत—प्रतिशत उन कृषकों को उनके खेतो से बेदखल करेंगे, तो वो कहां जायेंगे। कालिंदी इस्पात के समस्त संचालक से छोटा सा सवाल करना चाहूॅगा। आयु मेरी छोटी है, लेकिन सवाल बहुत बड़ा है, कि अगर आप फैक्ट्री लगा दोगे, कि क्या आप

गारंटी दोगे। क्या घर–घर से युवा को, हर उस बच्चे को, जो रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहा है, कोई पूना जा रहा है, कोई हैदराबाद जा रहा है, आप उसको रोजगार दोगे। ये मुझे गारंटी चाहिए। क्योकि मैं अपना जमीन दे रहा हूॅ, क्योकि मैं अपना जीवन दे रहा हूॅ, मैं इस गांव में जन्म तो नहीं लिया है। लेकिन मेरा पूरा बचपन इस गांव में पला–बढा है। ये गांव का जो कर्ज है, वो मैं अपना सर्वस्त निछावर कर दूंगा तब भी मैं खपरी–बेलपान और इस धरती का मोल कभी चुका नहीं पाऊंगा, तो ऐसे मिट्टी से आप बेदखल कर रहे हो। आप गारंटी दो 6 सूत्रीय मांगो को लेकर कल, हम खरे जी से जो संवाद किया था, पहले स्टेटमेंट पर मंच पर आप हमको बकायदा लिख के दीजीए। आप लिखित रूप में दिये है। उसमें कितना ग्रामर मिसटेक है। कितना ग्रामर मिसटेक है उसमें, हम गांव के रहने वाले बहुत भोले–भाले होते है। हमको समझ में नहीं आता है, बड़ी–बड़ी बाते, बड़े–बड़े सपने दिखा कर आज चले जाओगे। 10 साल बाद जब हमारे बच्चे सवाल पूछेंगे? कि आपने 10 साल पहले विरोध क्यों नहीं किया। तो हम उनको क्या जवाब देंगे, क्या जवाब देंगे, ये आपको इसका रास्ता, आपको निकालना होगा। क्योंकि ये बहुत बड़ा मुद्दा है। अभी–अभी आपको मैं बता रहा हूॅ कम मैं न्यूज पेपर पढ़ रहा था। एक चीज मुझे सबसे ज्यादा अजीब लगा। हसदेव, छत्तीसगढ़ में ऐसा कोई खनिज नहीं है। छत्तीसगढ़ में नहीं मिलेगा। हसदेव के किनारे कुछ गांव हैं, सारथी, हरियापुरा, फतेहपुर ये तीन गांव को खदेडा जा रहा है। किसलिये हसदेव नदी के किनारे और उसके आसपास कोयला माइंस है जो कोयला खनिज है बहुत मिलता है। आप लोगों को पता है उस कोयले के खदान के लिए कितना पेड़ काटा जा रहा है। आप लोगों को बताना चाहूंगा उस कोयले के खदान के लिए 2 लाख पेड को काटा जा रहा है, 2 लाख पेड़। हमारे शास्त्रों में कहा जाता है, एक पेड़ एक तरफ। किस कल्पना की ओर आगे बढ रहे है। हमको ये सोचना होगा। जहां पर फैक्ट्री खोल रहे हो। उसके बगल मे मेरा 5 एकड 61 डिसमिल जमीन है खसरा नंबर 98, आप क्या गारंटी देगे कि आपके फैक्ट्री का धूल मेरे जमीन में नहीं जायेगा। इसका गारंटी आप दे, सकते हो तो, आप फैक्ट्री लो। आप गारंटी नहीं दे सकते हो आपको कोई अधिकार नहीं है, आप किसी के गले को काटो। अगर आप फैक्ट्री खोल रहे हो तो अच्छी बात है। कोई दिक्कत नहीं है कोई प्रॉब्लम नहीं है। लेकिन आप हमारे 06 सूत्रीय मांगो को पूरा किजिये। उन मांगो को पहले करके दिखाओ। उसके बाद आप लोग उसका भूमि पूजा करोगे। हमको विश्वास चाहिए। 2005–06 में ये फैक्ट्री बनकर तैयार हुआ। लेकिन देखिये क्या स्थिति है यहां पर, मेरे घर में मैं सोया रहता हूॅ मेरे घर में आप जाओगे, भुतका कहां मिलेगा, फैक्ट्री का काला–काला भुतका चला जाता है, तो क्या मैं अपना घर

छोड़ दू। अपने भुतका के डर से। बताईये न क्या मैं अपना घर छोड़ दू। भुतका के डर से, जिसको मेरे को दो पैसा लेना–देना नहीं है। मेरा फसल बर्बाद हो रहा है साहब मैं कहां जाऊ। मैं एक किसान हूॅ, मेरी एक छोटी सी मांग है, कि मुझे मेरा हक चाहिए। हर चीज मुझे गारंटी में चाहिए, अभी और इसी वक्त, मैं गारंटी चाहता हूॅ। अभी आप फैक्ट्री खोल रहे हो तो, हमारी 06 सूत्रीय मांग यही पर कहीं न कहीं हमको एक बुनियादी ढांचा चाहिए। अभी इसी वक्त, कल को हमको बोलेगां, एक हफ्ता से हम बैठक कर रहे थे, गांव में कल को जब हमारे बच्चे पूछेंगे। तुम लोग तीन–चार दिन बढिया मटमटा रहे थे जी, फैक्ट्री खुले बर, फैक्ट्री तो खुल गये। अब देखथन कि अब तुमन ला ओधत नहीं देवत हे तीर मा। मैं एक चीज आश्चर्य मे रहव कि कल हमन बैठक बैठे रहन तो खरे जी आईस। मन मा डर रहीस। हर बात ला मैं करूंगा बोल रहा है, इतना इजली कोई मांग पूरा हो सकय। थोडा एरीगेशन के 2 रूपया के काम है क्या? बहुत समय लगते, तब एरीगेशन होथे। कहीं न कहीं खरे जी के विचार मा मोला संदेह प्रकट करत हे कि खरे जी मैं मांग करथव कि आपमन से मोला विथ प्रूफ चाहिए। गारंटी चाहिए। हम ला गारंटी देवा। गारंटी मोला अभी चाहिए। अभी करके दिखावा। नई दिखा सकथ हो तो, तुमर हमर जैराम जी की। बात यही मा खत्म हो जाही। फैक्ट्री खोलथ हव, कि बंद करथ हव। बात यही पर बंद हो जाही। क्लीयर हो जायही, हमला गारंटी देवा। हमर लईका कहां जाही तेला बतावा। हमर लईका कहां जाही, बतावा भाई। लईका तो पैदा कर देन हन। बतावा न कहा जाएही। क्या खाईही ओहू ला बतावा, मैं खुद एम. ए. पास हूॅ, मैं भी घूमत हव, मोला भी तो रोजगार के जरूवत हे। तय रोजगार नहीं दे सकत तो मोर खेती, किसानी ला मत छू। सही बात है कि नहीं, आज गांव के युवा लईका मन फांसी लटक के मरत। ओखर मुख्य कारण है रोजगार। हमन ला रोजगार चाहिए। फैक्ट्री तो भैया खुल जाही, सबसे पहले हमारे गांव मा बीमारी होही, कैंसर होही। क्या होही कैंसर, ये बात, मान के चलो, फैक्ट्री खुलत थे तो कैंसर ला खरीदत थन। ऐखर निदान कौन करही, आज 15 साल हो गये है एके के झन डाक्टर बैठे हे हमर गांव मा। ओखर तो हिसाब दे खरे जी। 15 साल हो गये तोर फैक्ट्री ला खुले मा एक झन डाक्टर भेजे हस, के झन पानी के टैंकर भेजे हस, गांव मा बाढ आते तो गांव डुबत रहिये। 17 बार फोन करथन, तो फोन ला स्वीच ऑफ कर देथस हमर जो 06 सूत्रीय मांग हे, हमर पूरा होना चाहिए, मांग होना चाहिए और गारंटी यही पर होना चाहिए। मोर सौदा तैयार होना चाहिए। हमर पहली मांग हे, रोजगार कौन आधार में दिया जाना चाहिए। कैसे दी जानी, कितना–कितना क्वालीफिकेशन में दिया जाना चाहिए, अभी तैयार होना चाहिए। शाम तक के तब तो हमन तैयार हन। दूसरा मांग है कि ग्राम

कोकडी पंचायत के आश्रित ग्राम को गोदनामा लेना चाहिए। गोदनामा क्या चीज है भाई तव हमर गांव में अपन फैक्ट्री खोलत थस, तोला हमन गोद लेवत थस। तो हमला क्या गोद लेबे। लिखित रूप से होना चाहिए। तीसरा मांग है, उद्योग नीति का पालन होना चाहिए। छत्तीसगढ़ शासन फरवरी 2019 में नियम लागू करीस हे जो नियम 2024 तक लागू हे। वो 54 पेज के नियम है जो ओमा कई सारा कंडिका हवय। पूर्णतः पालन होना चाहिए तय क्या पालन करें। आज 2–3 दिन हो गये फैकट्री बंद है। काहे के नाम से एखर नाम से बंद है, तोला एसने शासन–प्रशासन के डर है। तो हमेशा बंद कर या फिर शासन के नियम के पालन कर तथा शासन उद्योग खोले बर, कहत है ओखर बर उद्योग नीति भी बनाये है। तब तो जी सकबो, हमर यही उदेश्य है खरे जी, कालिंदी इस्पात तहू जी और हमला भी जीने दे। आखिर तय गोदनामा ले थस, हमन तोर समर्थन करत हन। तोर लईका हन। हमन रोबो तो तोरच बसो आबो। हमन भी लोग लईका हन। हमर कई पीढ़ी बर्बाद हो जाही, तुहार निर्णय मा। फैक्ट्री खोल थस ऐखर बर फुल गारंटी देना चाहिए। लिखित रूप मा देना चाहिए। आप मन के ग्रामर सही नहीं है आप मन के पास टाईपिस्ट नहीं है क्या? क्या लिख के देव थे, ग्रामर सही नहीं है। चौथा नंबर है। औद्योगिक इकाई के रूप में प्लास्टिक कंपनी जैसे हानिकारक जैसे प्लांट नहीं होना चाहिए, पांचवा नंबर में औद्योगिक प्लांट प्रदूषित रहित होना चाहिए। आप मन से हाथ जोड़ के बिनती है खरे जी, जो 06 मांग है पूरा होना चाहिए। छठवा नंबर है आपके प्लांट द्वारा प्रदूषित किसानों क फसलो को हानि होती है। उसका मुआवजा और क्षतिपूर्ति देना चाहिए। कितना झन, किसान ला, मुआवजा दिये हो। ऐखर रिकार्ड कहा है। कहा है बतावा ना। आज हमर खेत मा जाके देखब, पूरा धुर्रा हवय। करिया–करिया धुर्रा हवय, ओखर हिसाब होना चाहिए।

31. **श्री श्यामलाला पटेल, ग्राम–खपरी** :– मैं हां किसानी करथव तो, बीडा बांधथव तो काला–काला, बीड़ा मा रच जाते। मोर कुरता पूरा काला–काला हो जाथे। वही पर गाय गरूवा रखे हव। मै ऐखर पूरा विरोध करथव। मोला पसंद नहीं है।

32. **श्री दिलेश कुमार तिवारी, ग्राम–कोकडी** :–शिवनाथ नदी के तीर में जो पानी है, वो पूरा धूल के कारण पूरा काला पड़ जाता है क्या इसको रोक सकते हो। दूसरा बात कुआं है उस पानी को अगर पी रहे है, दूषित प्रदूषण, एक करोना महामारी बीमारी से हम लोग परेशान है। अगर इस प्रदूषण ने फैलते है। मेरे को सुनाई पड़ा है कि यहां पर 10 कंपनी का लांच होना है। एक पॉवर प्लांट कंपनी, कालिंदी इस्पात और इसका तीन गुना होना है। अगर एक विस्तार में

इतना है तो इसका तीन गुना होगा तो हमारे गांव और आसपास का क्षेत्र को प्रदूषण और हमारे बच्चे बीमारी कई प्रकार की बीमारी होगा। ये क्या प्रदूषण को पर्यावरण को बचा सकते है। आज तक 2006 से कालिंदी इस्पात की कंपनी खुला गया है। मै बोलना चाहता हूँ कि जब से अपना आज 2006 से 2022 तक हुआ है। प्रदूषण आज भी जा रहा है। अभी प्रदूषण नहीं है क्योंकि आज शिविर लगा है। इसलिए प्रदूषण नहीं है। अगर 2 बजे जाकर देखो, 6 बजे जाकर देखो तो प्रदूषण फैलते है। वहां का जो निलगिरी का पेड़ है, बहुत सारा लगा है। कम से कम 50 एकड़ में लगा होगा, लगभग अनुमति है। उसमें काला ही काला पडा है। दीवाल में पडा है तो काला–काला पड़ा है। उसके घर में कल हम लोग बैठे थे। उसके घर में काला ही पडा है। इसको रोक सकते हो आप। तभी कंपनी खुलने देंगे, इसका विरोध है। आज जो प्लास्टिक कंपनी खुला गया है, उन लोग जान रहे है कि कितना उसको स्वास्थ्य में हानिकार होगा। कुछ दिन के बाद आज स्कूल में भी सहयोग दे रहा था। 26 जनवरी, 15 अगस्त का, कुछ राशि भी दे रहा था, कुछ माध्यम से दे रहा था। आज क्यों बंद हो गया, क्या आपका कंपनी बंद हो गया क्या। आज कंपनी खुल जायेगा। लेकिन जनता जर्नादन का क्या उसका स्वास्थ, उसका शरीर और उसका जो जीवन है, उसको आप दिला सकते हो क्या? क्योंकि हम लड़ रहे है तो अपने अधिकार के लिए लड़ रहे है। मौलिक अधिकार है इसमें 06 सूत्रीय है ज्यादा खिचा जायेगा। आपको देना होगा। नोटरी के साथ अभी, इसी वक्त को, तभी फैसले को हम स्वीकर करेंगे, या अन्यथा स्वीकार नहीं करेंगे। क्या दे सकते हो मैं महोदय जी से पूछना चाहता हूँ। इसका मेरा विरोध है। पूरे जनता का आसपास के रहटाटोर, खपरी–बेलपान, कोकडी, दाई–दीदी ओखर विरोध है। कंपनी यहां नहीं होना चाहिए। आज 2006 से लेकर 2022 तक क्या किया। ग्राम कोकडी के ग्राम पंचायत के लिए, क्या किया। आज बड़े–बड़े नेता लोग आते है। उसको 10 हजार, 20 हजार, 50 हजार दे देते हो। लेकिन जनता को क्या मिलता है बताईये। आज तक जनता को क्या दिया। आज हमारे क्षेत्र को मानिकचौरी से मनोज साहू जी का धान काला पड गया था। लेकिन उसका अध्यक्ष के कारण धान को खरीद लिया। अन्यथा दूसरा जनता किसान का धान रहता तो कभी सोसायटी में बिकाऊ नहीं होता। वापस चला जाता। इसके लिए आप लोग जिम्मेदार हो। एक नागरिक के नाते अपने मौलिक अधिकार के रूप में यहां पर अपने बात को रखा गया था।

33. **श्री हरीशंकर गुप्ता, मस्तूरी** :–मेरा आपत्ति है कि इस्पात संयंत्र स्थापित होने से स्थानीय एवं आसपास के किसानो को उपजाउ कृषि भूमि प्रदूषित प्रभावित होगी। साथ ही फसल के उत्पादन क्षमता में कमी होगी। इस्पात स्थापित होने से आसपास के स्थानीय निवासियों को सांस संबंधी परेशानियां, विभिन्न प्रकार के बीमारियां का सामना करनी पड़ती है। यह देखा गया है कि संबंधी उद्योग द्वारा पर्यावरण संबंधितो को उचित माध्यम से रोजगार प्रदान नहीं किया जाता है। जिसके कारण आम लोगों को भारी निराश व व्याप्त स्थिति बनी रहती है। समय–समय में इस संबंध में जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न प्रदूषित इनके खिलाफ शासन को प्राप्त किया जा चुका है। इस संबंध में किसी भी प्रकार का नहीं किया गया है। इस समस्या का परिस्थतियों को ध्यान में रखते हुए इस्पात संयंत्र लगाने का विरोध प्रगट करते है। इस्पात संयंत्र स्थापित होने पर हमारे भविष्य जनहित में भी उग्र आंदोलन किया जायेगा। इसकी जवाबदार शासन–प्रशासन की होगी।

34. **श्री मनोज कुमार साहू, ग्राम–मानिकचौरी, अध्यक्ष** :– मोर ही, धान के बारे में बात होवत रहिस के 16 एकड़ में लगे रहीथे ओखर मैं दुख ला झेलथव। वो धान हमेशा काला पड़ जाथे। ये बात सही है। मोर पास अभी 40 कट्टी धान पडे हे। आज 2 क्लिन में, ये हाल हे हमर, सड़क छिना गये। 2003 मा सड़क बने रहिस हे। प्लांट खुली को 1 साल बाद, सड़क फिर खत्म हो गये रहिस हे। फिर सडक बने है, फिर खत्म हो रहिये। ये फिर सड़क बनत थे, फिर खत्म हो जाही, का बर केपिसिटी से ज्यादा वाहन चलही। 40 टन, 50 टन, हमन कोई उद्योग के विरोध नई करन, ऐखर से आम जनता मन ला रोजगार भी मिलथे। क्षेत्र के विकास तो निश्चित होथे। लेकिन वो मापदण्ड भी अपनाना चाहिए। हमला सड़क चाहिए। पचपेड़ी से लेकर कालिंदी इस्पात तक 50 टन के सड़क बने। हमला कोई आपत्ति नहीं है, बनना चाहिए, अतेक बर प्लांट लगत हे, सड़क भी हैवी होना चाहिए। भारी माल आहीं, प्लस ईएसपी 02 महीना बर प्रदूषण ला सही साफ रखही। धान जैसी पकराईस, ओखर पाखर के समय सहयोग कर दे, वो किसान के हित होही। वो हू नही, अपन थोडा स्वार्थ के लिए, हजारो किसान के जीवन बर्बाद करके, क्या फायदा, ऐसा प्लांट लगाये के क्या फायदा। जेमा एक झन के फायदा होही, ज्यादा से ज्यादा 100 से 200 मजदूर के फायदा होही, हजारो किसान एखर से प्रभावित होवत थे, पूरा फसल बर्बाद हो जावत थे। मैं खुद भुक्त भोगी हव। मैं इसलिए शिकायत नहीं करत थ कि मोर एक झन के कालिंदी मा शिकायत करके क्या मिल जाही। वो करीया पाखड पढ गे रहीस थे। सही बात है, मोरे धान मा सब झन देखे हो भैया मोरे क्या सबो किसान

बर्बाद हे। हमन ये चाहत हन कि प्लांट लगाये जाथे तो पूरा उद्योग के मापदण्ड का पालन करें। अगर कोखरों फसल क्षति होवत थे तो क्षतिपूर्ति करें। अधोसंरचना के तहत लिफ्ट एरीकेशन होना चाहिए। वास्तविक मा होना चाहिए। हमर पास डेम के लिए बंधवा तालाब पढे हे। डेम ला विकसित करे और नहर मा पानी छोड़ दे। बारामासी नहर के निर्माण होये, ऐमा होना चाहिए। भटचौरा, हरदी, गोबरी, मानिकचौरी, खपरी–बेलपान, पुरी के भी उद्धार हो जाही। अगर एक ठीक लिफ्ट एरीकेशन आ जाही तो एके सड़क हो जाही, बहुत अच्छा हे। अगर प्लांट डालना है, तो हमला हैवी सड़क दे, चिकित्सा दे, बढ़िया हास्पिटल के निर्माण होना चाहिए, ताकि अच्छा चिकित्सा उपलब्ध होवय। हमन धुआं खा–खा के अपन फेफड़ा ला बर्बाद थोड़ी करबो। मैं एसी मा सो थव, घर मा, पोछा मारथे तो करिया–करिया निकलथे ओमा से। ये हाल हे सोच ले एसी, वाला रूम ला फर्क पडथे। भाई ऐखर पालन करे ना, हमला कोई एतराज नहीं है। एक क्लिन क्या, 100 ठोक क्लिन गाढे। हमको कोई ऐतराज नहीं हे। लेकिन किसान के हित ला ही देखय, मजदूर के भी हित ला देखे। तब तो प्लांट लगाये अन्यथा कठोर विरोध करथव। प्लांट खुले भैया 02 क्लिन भारी है।

35. **श्री अशोक सूर्यवंशी, सीपत जांजी** :– गांव के संगी–संगवारी मन से मैं एक निवेदन करना चाहत हव। या अपन मन के मांग ला रखव। या फिर विरोध ला रखव। आप मन एक तरफ विरोध करथव। एक तरफ मांग रखथ हव। आपमन के तीर मा उद्योग लगे है लाभ और घाटा ला जानथव। मोर निवेदन है कि सब के सब विरोध मा बात करव। या 06 सूत्रीय मांग के बात करव। एक तरफ बोलत हव कि 16 एकड़ के धान करिया पड गये हे। एक तरफ बोलत हव कि अच्छा है उद्योग खुलना चाहिए। सब ला लाभ मिलना चाहिए। सब ला रोजगार मिलना चाहिए। पानी मिलना चाहिए, सबके स्वास्थ के व्यवस्था होना चाहिए। शिक्षा के व्यवस्था होना चाहिए। एक तरफ बोलथ हो कि 16 एकड़ धान हमर करिया पड गये। बेचा गये। अध्यक्ष हे तो बेचा गये। नई तो नहीं बेचातिस, आप अध्यक्ष हो तो महोदय बेचा गये, मोर क्या होतीस, विरोध करना है तो विरोध में बात करो। समर्थन करना है तो समर्थन में बात करो।

36. **श्री मनोहर कुर्रे, ग्राम–मस्तूरी** :– ये लोकतंत्र मा अपन विचार रखे के सबो ला अधिकार हे। मैं बैठे–बैठे सुनत रहव। बहुत आदमी मन समर्थन करत रहीन। बहुत आदमी मन विरोध करत रहीन। जायेज हे अपन मति अनुसर। समर्थन भी करत रहीन और विरोध भी करत रहीन। ऐमा कोई ला टिका–टिप्पणी करे के

जरूवत नहीं हे। जेन प्रभावित होत हे वो तो विरोध करबे करही। जे ला लाभ होवत है वो समर्थन करही। मै सबसे बड़े बात कहना चाहथव। प्रभावित गांव के सरपंच हे, पाण्डेय जी, साहू जी, टण्डन जी श्यान मन कहे हे 100 बक्ता और 1 लिखता, आप मन ला मालूम होना चाहिए कि समर्थन मा सरपंच अपन मांग रख चुके हे। कालिंदी संयंत्र के आप हमन सब चिल्लात रहिबो। आज हमसब प्रभावित होत रहबो। लेकिन कंपनी खुल के रयही। काबर हमर साथ में कोई ताकत नहीं है। कर सकत थन। चिल्ला सकत थन, अपन मांग ला रख सकत हा। वो छोटे–मोटे आदमी नहीं रहिस। जिला पंचायत के सदस्य हे। हमर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बैठे हे। हमन ज्यादा दूरीहा के आदमी नही हन। हमन यही के जनप्रतिनिध हन और आपके साथ मा हन। कल एक्सीडेंट हो जाथे तो चक्काजाम मा जाथव। हमन रहथन, हमन के उपर एफआईआर दर्ज होते। आप मन ला बताना चाहतव कि विरोध करे के तरीका होथे और समर्थन करे के भी तरीका होते। भाई बोलत रहिस समर्थन करना है तो समर्थन करो, विरोध करना है तो विरोध करो, लेकिन न्याय संगत विरोध करो, न्याय संगत सपोट करो। कालिंदी इस्पात खुले है तो आपके गांव के किसान जमीन ला दे हे। ये बात मैं सुनत रहव, कि मोला मुआवजा नहीं मिलीस। मुआवजा मिलना चाहिए। मोला नौकरी दे रहीस औ मोला नौकरी से निकाल दिस। गलत बात, क्या ऐसने परिस्थिति निर्मित हुईस जो ओला नौकरी से निकाल दिस। क्या परिस्थिति हुईस ओला मुआवजा भी नहीं मिलीस। पहली भी यहां जनसुनवाई होये रहीस तो कालिंदी इस्पात खुले रहीस और आपमन के समर्थन से खुले हे। कुछ आदमी मोला याद हे विरोध करे रहीस। हमू मन रहन वो समय मा ओर आज भी हन। मैं ये कहना चाहथव कि फैक्ट्री के कोई विरोध नहीं है। और विरोध है तो किस बात मा विरोध हे। फैक्ट्री वाला मन कहते कि हमन के अधिकार है फैक्ट्री खुलना चाहिए, तो ओखर अधिकार और फर्ज भी बनथे कि क्षेत्र के विकास के लिए और क्षेत्र के पर्यावरण संरक्षण के लिए, पर्यावरण संरक्षण के बात होवत हे। देश दुनिया मा होते। कहे गये हे, स्वास्थ ही धन है, स्वास्थ ही नही, ंतो धन के कोई मतलब नहीं हे। फैक्ट्री वाले मन ला प्रबंधक मन ला, आप फैक्ट्री खोलत हव अच्छा बात हे। आप अधिकार के बात करथव। आप अपने जिम्मेदारी से भी नहीं हटव, बहुत अच्छा बात बोलत रहिस हमर साहू जी हा कि मोर धान करिया पड गये। कोई गलत नहीं बोलत रहिस हे, जो बात हे वो बात ला बोलत हे। मैं ये कहना चाहतथ हव जो आप पर्यावरण से क्लीयरेंस चाहत हव। पर्यावरण से क्लीयरेंस देही तो कल खुल जाही फैक्ट्री, आप नई रोक सकव। मैं कहना चाहत

हव कि अपन जिम्मेदारी फैक्ट्री वाला निभाईस हे। पर्यावरण के क्षेत्र में क्या काम करिस हे। सीएसआर के मद के भी बात करिस हे, बहुत अच्छा बात करे हे। जब लाखों करोड़ो टर्न ओवर हे फैक्ट्री के ओखर जिम्मेदारी भी हे। कि कुछ अंश हमर क्षेत्र के विकास के लिए भी देवये। मै पूछना चाहत हव कि गोबरी, खपरी–बेलपान, मानिकचौरी मा विकास के लिए कहां–कहां पैसा दीस हे। कहां–कहां पानी की व्यवस्था करीस। कहां–कहां स्कूल के लिए व्यवस्था करीस, और कहां–कहां स्वास्थ्य के क्षेत्र मा काम करीस हे। 15 साल हो गये हे स्थापित होये। केय हजार पौधा लगाईस हे, वो बताये हमला। जब ये क्षेत्र में काम नई करना है, तो ऐसने विरोध के सामना करना पड़ही। मोला कहे मा कोई विरोध नहीं हे। एक खुले तो ये हाल है दो ठोक खुलही तो क्या हाल होही। मै ये कहना चाहत हव साथियों विरोध करो, कोई दिक्कत नही। ऐसने विरोध न करो जो कि क्षेत्र के विकास रूके। हमर क्षेत्र के आदमी भी ओमा प्रभावित मत होये। विरोध होना चाहिए, मैं चाहत हव कि हमर भाई मन अपन–अपने बात ला रखे। पूरा जायज मांग हे। ओखर मांग ला पूरा करे होना चाहिए। लिफ्ट एरीग्रेशन के बात करत रहिस सिंचाई व्यवस्था होना चाहिए। क्षेत्र के विकास में कोई काम होवत हे तो फैक्ट्री लगत हे तो लगना चाहिए। समर्थन देना चाहिए और समय–समय में ध्यान देना चाहिए। हमर हित बर फैक्ट्री काम करत हे कि नई करत हे। हमल वहां भी अपन बात ला रखथन। हमन आपके विरोध नई करना चाहथन, हमला आपके समर्थन में बात करना चाहथन। अपन फैक्ट्री हा अपन दायित्व ला निभाना चाहिए। कोई ऐतराज नहीं हे। फैक्ट्री खोल ले ना भाई। हमर जनता मन ला काम देवय। ओखर मांग ला पूरा करय। एक्सीडेंट होते, बड़े–बड़े हाईवा आथे। यहां के पानी के उपयोग करथ हा, हवा ला उपयोग करथ हा। प्रदूषण फैला थे ये दिशा मा कौन सा काम करे। वादा पूरा करा। जनप्रतिनिधि अपन बात ला रखही। आप ला पूरा करे पड़ही। आप पुराना वादा करे हव वो वादा ला पूरा करो। फैक्ट्री खोला।

पुनः उद्‌बोधन करते हुए, देखो यहां पर हमर जो ग्रामीण है 80 प्रतिशत एकर विरोध करत थे और 20 प्रतिशत जो कंपनी के आदमी हे जो ओकर समर्थन करत हे। यहां पर पूरी तरह से घोर विरोध किये जाथे। घोर विरोध करे के कारण ये है कि यहां पर जो मूल भूत की आवश्यकता मिलथे वो चीज यहां पर नई मिले। पडोसी गांव के ग्रामीण मन ला। जैसे कि अभी तक पडोसी मा घर हावय नवापारा जहां पर ये कंपनी एक ठीक नल नई दे पाये हे। जो कहां से नदियां के पानी लाके देही यहां पर। जाबे तो सामूहिक कार्यक्रम के लिए 500

रूपये चंदा तक नहीं मिलथे। ये क्या आदमी मन ला उचित सुविधा दिला पाही। ये बात हे दो ही क्लिन से इतना तरस्त आ चुके है जनता 5 साल मा सरकार बदल देथे। ये तो 15 साल ले करिया नाग सांप शेष नाग बनके बैठे हे। फुस मारथे। पूरी तरह से जो वेतन मिलना चाहिए वो वेतन नहीं मिल पावत हे। 6000 से 7000 ओकर वेतन हावय 15 साल हो गये। अभी कि अभी वोमन हेल्फर हवय। कोई पद नई पाये हे। झाड़ू पोछा करके 50 साल से जीयत खाथे। विरोध करना है तो मोर साथ एक साथ विरोध करव कि कंपनी ला बंद करवाना है तो बंद करो। नई खोलवाना है हमनला। अगर कंपनी ला चलाना है तो हमर हरीश भाई के मांग ला पूरा करव। 6 सूत्रीय मांग हे ओला पूरा करव। बेरोजगार भाई मन ला रोजगार मिलना चाहिए और मूलभूत की सारी सुविधाये उपलब्ध करवाना चाहिए कंपनी ला। इतना कहकर मोर वाणी ला विराम देना चाहथव मैं गौतम नायक, ग्राम–मानिकचौरी

पुनः उद्‌बोधन करते हुए, कोकड़ी गोबरी, रहटाटोर, बेलपान, खपरी, एतके दूरके वार्तालाप करें। मस्तूरी मन के विधायक व दर्रीघाट के आके बोली तो हमर समस्या के समाधान ला नई कर सकय। हमर अतके दूर के समस्या ला सुनही और अतके दूरके विचार लस मढाही। वो तो एसी मा सुत जायही। हमार यहां चार घंटा लाईन नई रहयी। जा के देखबे तो गोबरी मा लाईन नई हे। अभी गोल होही। पेड के छईयां मा हमन जीयत हन। लेंटर के घर मा रईके हमन नई जी सकन। दूरीया के नई सुनना है अपन बीच के ही सुनना हे। अपने ही बीच के बात ला रखा। मैं मस्तूरी के विधायक हव, ओ कहत हे मैं वहां के विधायक हव एक झीन भैया भी बोल के गईस कंपनी मा मोला कुछ कारण वश निकाले गईस होही। मोर रिकार्ड ला देख ले वो आदमी मैं ही हवव। ओखरे सेती मैं दुबारा बोले बर आये हव। ओ आदमी फिर से एक पईत बुलाना चाहथव। मोर खामिया ला खोज ले और कंपनी के रिकार्ड ला देखवा ले। मैं हा 35 रूपया कमाये हव, मैं 55 रूपय का मांग करे हव। मोला पैसा ज्यादा देना पडही कहके मोला भगा दिस। कंपनी के रिकार्ड ला खोलवा के दिखा लो। मैं 55 रूपये का मांग किया हूं तो क्या गलत किया हूं क्या? ओकरे सेती मोला खेदाड दिस। मैं जितना दिन के नौकरी करे हव ओकर भत्ता के सेती एक, दू बोरिंग खोदा जातीस। ओकर भुगतान होना चाहिए। मोका एक रूपया नहीं चाहिए। मेरा भी समाधान होना चाहिए। मुझे जवाब चाहिए। परमेश्र यादव, ग्राम–कोकड़ी

परियोजना के जो ई.आई.ए. हुई है उसके आज पर्यावरण जन सुनवाई हुई है उस संदर्भ में आप सभी के सुझाव, आपत्ति आदि आये है उनके संबंध में परियोजना प्रस्तावक द्वारा अपना प्रतिवेदन दिया है सबसे पहले मैं मंच पर उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों, पुलिस प्रशासन, मीडिया या ग्रामवासियों सभी का धन्यवाद करता हूॅ। जिन्होंने हमारा समर्थन किया उनका मैं धन्यवाद करता हूँ जिन्होनें कुछ बिन्दु रखे और अपनी मांगे रखी उनको मैं स्वीकार करता हूॅ। साथ ही जिन्होंने विरोध किया है उनका भी मैं तहे दिल से स्वीकार करता हूॅ जिन्होंने पर्यावरण पर चिंता जताई।

सबसे पहले वायु प्रदूषण से फसल पर प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की। उस संदर्भ में मेरा प्रतिवेदन यह है कि परियोजना वर्तमान में उद्योग चल रहा है। उसकी विस्तार की परियोजना है। वर्तमान में यह उद्योग छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल के द्वारा प्रदत्त सम्मति के आधार पर संचालित है। उद्योग में प्रतिदिन सभी नियमों एवं पालनों का अनुकरण किया जाता है। वर्तमान में वायु प्रदूषण नियंत्रण हेतु ईएसपी एवं चिमनी लगी हुई है। उसमें ऑनलाईन मॉनिटरिंग की जाती है। साथ ही ईएसपी एवं बैग फिल्टर की स्थापना किया गया है। साथ ही परियोजना अभी 50 मिलीग्राम सामान्य घनमीटर धूल के उत्सर्जन के साथ चल रही है। जिसको प्रस्ताव में कम करके 30 मिलीग्राम सामान्य घनमीटर धूल के उत्सर्जन किया जाना प्रस्तावित है। तदैव आसपास के क्षेत्र में वायु की गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं होगा। खेती पर, स्वास्थ्य पर इसके महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं होगें। साथ ही जल के कारण चिंता व्यक्त की गयी कि सूखा क्षेत्र है तो हम आस–पास के गांव के वॉटर शेड मैनेजमेंट का प्लान पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को देंगे। और उनके मार्ग दर्शन के अनुसार उस पर कार्य करेंगे। साथ ही जल के संबंध में यह जानकारी देना चाहूंगा की जल का स्त्रोत शिवनाथ नदी से होगा। और भूमिगत के जल का उपयोग प्रस्तावित विस्तार पर नहीं किया जायेगा। स्थानीय लोगों को रोजगार में प्राथमिकता नहीं मिलती है इस संदर्भ में मैं बताना चाहूंगा कि होने वाली विस्तार परियोजना में संबंध में 815 नये रोजगार की संभावनाएं उत्पन्न होगी। जिसमें छत्तीसगढ शासन के उद्योग नीति के अनुसार अकुशल में 100 प्रतिशत मजदूर स्थानीय होंगे। अर्धकुशल में 70–80 प्रतिशत, और प्रशासनिक में 40 प्रतिशत रोजगार स्थानीय निवासियों को ही दिया जायेगा। गांव में सड़को के बारे में भी चिंता व्यक्त की गई है। इसलिए परियोजना प्रस्तावक की ओर से एक प्रस्ताव बनाकर

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को दिया जायेगा सी.एस.आर के तहत् और उस पर अनुमति दी जायेगी और कार्य किया जायेगा। और उसके अलावा भी कंपनी गांव के साथ काम करते रहेगी। सबसे पहले बात यह है कि कंपनी में किसी प्रकार का नये जमीन लेने का कोई भी प्रस्ताव नहीं है। जो कंपनी के पास जमीन है उसी मे ही बस परियोजना का विस्तार किया जायेगा। आने वाले समय में पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन के दिशा–निर्देश अनुसार सीएसआर का व्यय, इस पब्लिक हीरिंग में आज सुझाव, मुद्दो के आधार पर पर्यावरण उन्नयन पर ही खर्च किया जाना है। सीएसआर के तहत आसपास क्षेत्र के पर्यावरण को संरक्षित करने एवं उनके सुझाव के लिये सहायता होगी। हम सीएसआर कार्य के लिए आसपास के गांव के लिए गांव के जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामसभा से अनुमति लेकर कार्य करेंगे। परियोजना में पर्यावरण प्रबंधन योजना के तहत् जो कार्य होंगे वो सीएसआर के कार्य होंगें उससे आसपास के पर्यावरण में प्रभाव नगण्य होगा। परियोजना से उत्पन्न होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार से स्थिति में सुधार होगा। इसके पश्चात् लोक सुनवाई के दौरान निम्नलिखित व्यक्तियों के द्वारा अपना सुझाव/विचार टीका–टिप्पणी एवं आपत्तियां अभिव्यक्त की गई :–

37. **श्री मदनलाल टंडन, ग्राम–रहटाटोर** :–कालिंदी इस्पात को बुढार वाले ने खरीदा। प्लांटेशन का कार्य को चेंज करके परिवर्तन करके, इसको स्पंज आयरन प्लांट बनाया। इसमें हमारे साथियों का भी कुछ गलती थी। हमारे कोकड़ी सरपंच उस समय थे। बिना जाने–समझे, पूछे बिना इनको एनओसी दे दिया। इसी कारण से आज ये समस्या हो रही है। आप लोग जानते है, उस समय कोई ईएसपी नहीं था। कोई काम नहीं किया। अभी बोल रहे है परियोजना अधिकारी हम ये करेंगे वो करेंगे। आज 15–20 साल हो गया, आज तक के पेड़–पौधे नहीं लागये है। गांवों में भी, आसपास प्रभावित गांव में भी प्लांटेशन का कार्य किया जाना चाहिए। इसलिए कालिंदी इस्पात को बंद किया जाना चाहिए। अभी इन लोगों ने जितना दिन भी काम किया है। यहां के लोगों का शोषण ही किया है। किसी का कोई सहयोग नहीं किया गया है। जितना गांव प्रभावित हुआ है, इनको गोद लेकर, हर गांव में काम करना चाहिए। गांव का गली की निर्माण करना चाहिए, स्वच्छता के बारे में, हैण्डपंप लगाना चाहिए। ऐसा कुछ भी काम उन्होंने नहीं किया है। इसलिए ये इस्पात कंपनी बंद होना चाहिए। जानते है, हमारे गांव जाने वाला रास्ता बंद कर दिया गया था। कंपनी वाले है कि नहीं है। लेकिन जो राजस्व रिकार्ड में रास्ता दिया हुआ था अभी हमारा रास्ता तेडा करके

किनारे से दिया है। हमको घूमके जाना पड़ता है। उस समय सिंघानिया जी बोले टंडन जी यहां पर रास्ता सुविधा है, उस रास्ता को हम तेडा कर देते हे। राजस्व रिकार्ड में रास्ता बना हुआ है। रास्ता कटा हुआ हैं, तो उसको परिवर्तन करने वाले आप कौन होते हो। मेरे गांव के 25 लोग को ला के विरोध किया तब जा के रास्ता मिला। ऐसा काम कंपनी जनहित में काम नहीं करती है। हालाकि हमारे आसपास के लोगों को रोजी रोजगार दिया है। वो भी मजदूरी के नाम से दिया है। लेकिन उपर का पोस्ट नहीं दिया है। रोजी–रोजगार नहीं दिया है। हम किसान है, किसान खेती किसानी करते है। मिट्टी का काम करते है, पत्थर का काम करते है। वो काम तो हमारे पूर्वज ही करते आ रहे है। हमारे पढे लिखे बच्चे आ रहे है, उनको कितन रोजगार दिया। कितना महिला को रोजी–रोजगार दिया। ये सब देखा जाये तो ये सब जीरो प्रतिशत है। कुछ भी नहीं है। मैं बोलता हूॅ कालिंदी इस्पात हर हालत में बंद होना चाहिए। मैं कालिंदी इस्पात को सलाह दूंगा। फाउन्डेशन करके आधुनिक खेती करे ना। उनका हम स्वागत करते है। स्पंज आयरन जो चलाते है, रात को ईएसपी को बंद कर देते है। आसपास के पेड–पौधे काले, काला–काला दिख रहा है कि नई दिख रहा हैं। पानी की समस्या आ रही है, फसल नहीं हो रहा है, सब्जी भाजी यहां लगाते थे, वो लगाना बंद कर दिये। पानी निकलता नहीं है। इसमें हम क्या करें, फैक्ट्री के नाम से पचपेडी, मानिकचौरी, रेलहा, भवचरा, भटचौरा कोकडी, जोकरी, रहटाटोर, मनवा, पुरी, जैतपुरी अन्य प्रभावित गांव है। इसने फूटी कौडी का काम कहीं नहीं किया है। ये बहुत बुरी बात है। इसलिए ये कंपनी बंद किया जाना, शासन को बहुत जरूरी है। ये कंपनी हर हाल में बंद होना चाहिए। हमारे एक साथी के गलती के कारण से दे दिया गया, इसका मतलब सबको सजा देना नहीं होता है। इसलिए बंद होना चाहिए। इसके बदले फाउंडेशन करिये, खेती किसानी करिये। मेरा ये सलाह है, शासन–प्रशासन इसको ध्यान दे यहां पे खेती आधुनिक तरीक से उनको प्रोत्साहित करें। इसलिए हम विरोध करते है स्पंज आयरन हर हालत में बंद होना चाहिए। मैं इसका विरोध करता हूॅ।

38. **श्री नाग्रेन्द राय, ब्लाक अध्यक्ष, महमंद** :–मैं अपने क्षेत्र के प्रभावित जनप्रतिनिधि, जो आसपास के गांव वाले है। वो जनप्रतिनिधि आये हुये है। यहां पर जो समस्या है उनको लाके रखे और अपनी बात को कंपनी से रख के अपना स्टैण्ड बनाते है और बात करते है। जो समस्याये है उसके लिए मैं कंपनी को बोलूंगा कि उसका निराकरण करे। जो लोगों को फैक्ट्री से परेशानी है, उन परेशानियों

को ध्यान में रखते हुए जनता के स्वास्थ, शिक्षा, उनका जो यहां पर अधिकार है। जो पर्यावरण के लिए बनता है, उसको पूरा करे। मैं यही कहूंगा कि इन सब कार्यो का पालन करते हुए उद्योग भी जरूरी है। लेकिन जनता का स्वास्थ्य, शिक्षा, निवास कर रहे है प्रभावित क्षेत्रों में उनको भी रहन सहन में अच्छा स्तर उठाने में कंपनी का दायित्व बनता है। जनप्रतिनिधियों के आसपास के जो सरपंच है पूरा ध्यान में रखते हुए कंपनी और जनप्रतिनिधि दोनों जनता के हित में कार्य करें।

39. **श्री दीपक बंजारे, ग्राम–हरदी, गोबरी** :– कालिंदी इस्पात 18 वर्ष से 2016 से संचालित होवत हे, कालिंदी इस्पात प्रा0 लि0, ओखर कमियां, ओखर बहुत सारा कमी जो है ओला मैं अवगत कराना चाहत हव। ये वास्तविक बात है जो हमारा क्षेत्र हे पिछड़ा क्षेत्र है आपके कंपनी बहुत प्रदूषण से त्ररस्त हवय। बेराजगार जो युवा भाई है जो रोजगार के लिए तरसत हे। वो आज एक–एक रूपय के लिए तरसत हे आज। कंपनी मा आपके लायक नहीं हे। आप बाहर के आदमी ला एम्पलाईमेंट देवत हा, और हमर क्षेत्र के आदमी ला कुली मजदूरी ला काम करवा कर 2 दिन 4 दिन मा भगा देव थ। एकदम सत्य बात हवय, आपकी कृत्य से पूरा क्षेत्र में आक्रोशित फैले हुये हे। पूरा जनता आक्रोशित है एखर कारण एखर जिम्मेदार पूरा आप ही हो। अगर समय–समय में आप ध्यान देवत रहते। तो आज ये जनता है जर्नाधन है। जेकर घर मा, खेत खार मा, कंपनी स्थापित करके उद्योग चलाथव, और दुबारा हाथ फैला के आवश्यकता नहीं पडतीस। इतना कोई विरोध नहीं करतीस। आपकी मैनेजिंग सिस्टम पूरा तरीके से हमर कोकडी सरपंच पूरे तरीके से अवगत कराईस हे। पूरा फॉग हवय। क्षेत्र के जनप्रतिनिधि है पूरा एक भी प्रतिशत से मान सम्मान नहीं किया जाये कंपनी से। ये भी एक बात हवय, ऐसा बहुत सारा चीज है। कंपनी आप संचालित करथव। ओखर से पहले मैं आपसे गुजारिश करथव कि आज जिस तरीके से ईएसपी चालू नहीं करे हो। आप मन नया कंपनी स्थापित करके 02 माहीना ईएसपी चालू करके बताव। जेखर मन से कंपनी के आसपास के जनता ला विश्वास करे हव। मै वास्तविक मा कंपनी स्थापित करे के, आप प्रदूषण रहित रखा ना, आने वाला कंपनी मैं उद्योग के विरोध नहीं करथव। एखर कारण क्षेत्र मा ज्यादा विकास होही। लेकिन जो उद्योग नीति हय। 1993 से 2024 तक कडाई से पालन करो। साथ–साथ मा जो क्षेत्रीय बेरोजगार हे, योग्यता अनुसार, जो आदमी इंजीनियरिंग करे हे, मैं स्वयं एक इंजीनियरिंग स्टूडेन्ट हव। क्षेत्र मा बहुत सारे इंजीनियरिंग

स्टूडेन्ट हे। आईटीआई के स्टूडेन्ट हे। भट्ठा जा थे, मैं स्वयं जनप्रतिनिधि हव। हरदी, गोबरी के मैं बता थव कि इतना दुख लगथे। क्षेत्र मा कंपनी के बाद भी गांव का आदमी पढे–लिखे हो के भट्ठा जात हे। ईटा के काम करते, मजदूरी के काम करते। बहुत दुख के बात हय। काम करे बर यूपी, बिहार, झारखण्ड के आदमी मन रेगुलर पोस्ट मा काम करथे। बहुत ही दुख के बात हय। कालिंदी इस्पात के मैनेजिंग डायरेक्टर ला पुनः आग्रह करथव कि बेरोजगारी, स्वास्थ्य को लेकर आप विशेष ध्यान देव। आपके प्रति क्षेत्र बहुत आक्रोशित हय। अगर आप आगामी 02 महीना में स्थिति सुधार सकत हव रोजगार के उपलब्धि कर सकत हव। युवा साथी मन के लिए, आप मन के बीच कंपनी और ग्राम पंचायत कोकड़ी के बीच जो फाउंडेशन जो समझौता होये हव। 06 सूत्रीय मांग लेकर, एकदम जायद है एकदम सार्थक है। ओखर मांग शासन–प्रशासन से 4–5 साल हो गये गोहार लगाये बर। लिफ्ट एरीगेशन दे दे सहाब। 80–90 प्रतिशत लोग पलायन करत हे। लेकिन थक गये शासन–प्रशासन से मांग करे के, लिफ्ट एरीगेशन आज तक पास नहीं होये हे। बहुत दुर्भाग्य के बात हय। लेकिन कंपनी स्थापित करना है शासन–प्रशासन मा यहां 2 मिनट के समय लगाथे। कंपनी स्थापित करे मा। ये भी बहुत दुखद बात हय। किसान मन के जन समस्या ला इतना आसानी से शासन–प्रशासन नहीं सुन पा हय, तो हम कंपनी से फिर से गोहार लगाथन। आप मन के हमार ग्राम पंचायत कोकड़ी के मांग हे, लिफ्ट एरीगेशन के मांग हे एकदम जायज है। साथ–साथ जो और 05 सूत्रीय मांग हवय सीएसआर मद से हमारा अधिकार बनथे। आप नहीं देवत तो लूट के ले लेबो। हम छीन सकन थन हमर अधिकार है सीएसआर मद से, आपसे विन्रम प्रार्थना करथव कि 02 माह के अंदर स्टालेशन के काम ला चालू करव। मैं पुनः आप मन से ग्रामवासी के तरफ से गुजारिश करथव कि मांग करथव कि लिफ्ट एरीकेशन के कार्य को जल्दी पूरा करके, स्टालेशन करके काम ला चालू करा। कंपनी के मैं पुरजोर विरोध नहीं करथव। कंपनी से बहुत सारा डेवलपमेंट होथे। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार से बहुत सारा डेवलपमेंट होथे। मन के मन का संदेह होही ओला क्लीयर करना चाहत हव। कंपनी के विरोध करे से हमला कोई फायदा नहीं हे। हमन विरोध करथन ओखर नीति नियम से। नीति और नियम के पालन वो नहीं करत हे। हमन ओखर विरोध करथन। यहां राजनैतिक बात नहीं होना है। कंपनी संचालित है 2006 से 2022 हो गये। लेकिन कोई राजैनतिक पार्टी, कोई राजनैतिक समर्थन, हमन के बीच मा नई आईस, जो जनता मन के बात ला उठा सक्तीस। जनता मन के बात ला रख सकय। क्षेत्रीय मुद्दा ला अलग से करें।

40. **श्री ओमप्रकाश पटेल, ग्राम–खपरी** :– आज हमर प्लांट लगे हय पहली के आज करीब 15–16 साल हो गये। जनता मन के अभी तक बहुत से ऐसे शिकायत सुने बर मिलत हय। वास्तविक तो जो हमर प्लांट लगे हय। ये गलती ला पहले से सुधार के चले रहतिस तो आज ये स्थिति नई रहतिस। हमर प्लांट के जो मुखिया है ओला मैं बताना चाहत हव ये गलती ला दुबारा दोहरा के प्रयास मा हय, ये गलती ला सुधार के चले। हमन ओला आग्रह करथन और हमर साथी मन जो मांग रखत रहिस है। वो 05 –06 सूत्र मा जैसे अभी हमर दीपक भाई बताये हैय। लिफ्ट एरीगेशन के संबध मा। वो कार्यक्रम ला पहली करें। जो लिफ्ट एरीगेशन के जो हय ओला पहली करे, फिर बाद में अपने कंपनी के बारे में सोचे।

41. **श्री धमेन्द्र कुमार टंडन, ग्राम–रहटाटोर, सरपंच** :– कालिंदी इस्पात जो खुला है। जो आज से 15 से 20 वर्ष हो गये हे। जो हमारे गांव से 02 कि.मी. की दूरी में आता है और सभी किसानो का खेत और धान बोते है वो उसको बहुत नुकसान भी होता है इसी नाम से हमारे धान और फसल में बहुत हानि होता है कालिंदी इस्पात में डस्ट भी रात में छोड़ा जाता है। हमारा शरीर भी स्वास्थ्य भी बहुत खराब होता है और हानिकारक है और फसले भी हमारे बहुत खराब हो गये है। नया कंपनी खुलने वाले से ग्रामीणों को भी बहुत कठिनाईयों का सामना करना पडेगा और जो कंपनी खुलने वाला है महोदय जी से सादर निवेदन है कि ग्राम पंचायत रहटाटोर को और समस्त आसपास के ग्रामों को गोदनामा लिया जाये और हमारे गांव का जल स्तर नीचे हो गया हैं। पानी का भी बहुत तकलीफ हो रहा है, आसपास के गांव में, यहां कंपनी में बहोत सारा बोर खनन हुआ है। उसके कारण हम लोग के आसपास में पानी की सुविधा भी नहीं हो पा रही है और पानी के लिए बहुत दूर–दूर से पानी के लिए तरस रहे है। इसलिए मैं बोल रहा हूॅ कि हमारे ग्राम पंचायतो को आसपास के जितना भी ग्राम है, उसको गोदनामा में लिया जाये। बुजुर्गो को भी पेंशन दिया जाये। ग्राम–रहटाटोर, खपरी, गांव में अस्पताल खोला जाये। हमारे फसलो का भी नुकसान होता है उसका कंपनी मुआवजा भी दे।

42. **श्री नागेश्वर प्रसाद कैवर्त, ग्राम–रहटाटोर** :–मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कि कौन सा डेव्लपमेंट के बात होव हे। कंपनी कालिंदी इस्पात को खुले करीब 15 साल हो गये। यहां कोई डेव्हलपमेंट का बात ही नहीं हुआ है आज तक। पानी

की समस्या कंपनी वाले का जिम्मेदारी होता है, पास में पानी पिला दे, पानी के लिए तरस रहे है न जाने कितना डेव्हलपमेंट का बात होते मगर होते कुछ नहीं। गांव में एक भी रोजगार नहीं है पास में और यहां बात कर रहे है डेव्हलपमेंट की यहां भी ऐरीगेशन लगायेंगे, खपरी वाले पानी परोइन्गे। खेत मा धान उग जायेंगे और धुआं धक्कड़ छोडेंगे। रहटाटोर के बारे में क्या सोचे है। आप लोग धुआं में सांस लेंगे खपरी, कोकड़ी इसका प्रभावित धुआं धक्कड़ है इसका जिम्मेदारी लेंगे। उसको भी अपने गांव तक सीमित रखना। अपने गांव तक रखना। जिससे आसपास के गांव प्रभावित न हो। आप लोग एरीगेशन लगा लेंगे। बस एक मांग से कंपनी चालू हो जायेगा। रोजगार न जाने कितने रोजगार दिये है छत्तीसगढ में। इतने कंपनी है हर घर से 2–2 लोग को लगायेंगे फिर भी इंसान कमी पड़ जायेंगे। इतना रोजगार है यहां पर इतना कंपनी है क्या कंपनी है ये। हर चीज का कंपनी मिलेगा यहां पर। 8500 रेट है कंपनी लगा है पास में। ये ही रेट अदर स्टेट मे है। यहां पर उसका उत्पादन नहीं है वो रेट हमे यहां मिल रहा है। सीमेंट का क्या रेट हैं कंपनी लगा है छत्तीसगढ़ में रोजगार का बात हो रहा है आज कंपनी नहीं लगाया है खपरी में न जाने कितना कंपनी लगा है पूरे छत्तीसगढ़ में इतना रोजगार हो गये होते। क्या करे पढे–लिखे है भट्ठा जा रहे है। रोजगार का बात हो रहा है। डेव्हलपमेंट होगा यहां पर इतना दिन में हो गये होते। अगर नियम से काम करते तो छत्तीसगढ़ बोलने के लिए कोई भी राष्ट्रीय पार्टी आते है। धान का कटोरा है, सोना है चांदी है। यहां सब है लेकिन खाने के लिए दाना नहीं है। भाषण मारने से थोडी होता है भाषण मारने से पेट भर जाता तो सब चले जाते। बोलना क्या है डेव्हलपमेंट देख रहे है इतना दिन हो गया। पास से होकर जाता है धुआं धक्कड यही देखेंगे। रोड़ को क्रॉस करके बच्चे लोग पढ़ने जाते है, यही पास से। आदमी को देखने से समझ में आता है। अगल–बगल देखा पूरा धुआं रचा हुआ है। यहां से गुजरो तो गाड़ी चलता है ठाय से धुआं से पेट, शर्ट तो, कितना डेव्हलपमेंट होगा। एक टैंकर नहीं पहुंच पाया इतने दिन में हमारे गांव में एक टैंकर नहीं पहुंच पाया। इतना तस्त थे। कितना डेव्हलपमेंट करेगा सर, शायद इतना कंपनी है शायद इतना स्टेट में होगा और रोजगार कितना है, यहां पर रोजगार वाला आंकडा ही छोड़ दो। विरोध को भी बतायेंगे और समर्थन को भी बतायेंगे। कुछ सवाल होना चाहिए ना, भाषण देने से कुछ नहीं होता। नई तो तंबू नहीं गाढते, नही बुलाते काहे बुलाये हो यहां पर, हमको तो डेव्हलपमेंट नजर नहीं आया–पास में और इतना बडा कंपनी खुल जाता है तो इसमें क्या रिक्यूपमेंट आयेगा। आप लोग जानो, खपरी–कोकडी जाने क्या एरीगेशन में क्या फायदा कर लेंगे। सोना उगाइंगे, धान उगाइंगे, धुआ–धक्कड को तो आपको गांव में ही रखना पढेगा। कोकडी,

खपरी में एरीगेशन लगा रहे हो कंपनी को धुआं–धक्कड देखना पडेगा आप लोगों को। फायदा किसको होगा।

उपरोक्त वक्तव्यों के बाद प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर तथा क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा उपस्थित जन समुदाय से अपने विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया गया। किंतु जब कोई भी व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित नहीं हुआ तब लगभग 3:30 बजे प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई के दौरान आये विभिन्न मुद्दों के निराकरण हेतु परियोजना प्रस्तावक को पुनः आमंत्रित किया गया।

परियोजना प्रस्तावक की ओर से श्री नरेश निसाद, एनाकॉन लेबेरेटरी, नागपुर मेसर्स कालिंदी इस्पात प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–बेलपान, तहसील–मस्तुरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के द्वारा परियोजना के संबंध में लोक सुनवाई के दौरान उठाये गये मुख्य मुद्दों के निराकरण हेतु मौखिक रूप से उपस्थित जन समुदाय को पुनः अवगत कराया गया।

नमस्कार, मैं पुनः आपके समक्ष परियोजना प्रस्तावक की ओर से प्रस्तुत हुआ हूँ फिर से मैं सभी को आश्वासन देना चाहता हूँ कि हमारी क्षमता विस्तार की परियोजना छत्तीसगढ़ शासन के उद्योग नीति के अनुरूप ही लगेगी तहत् ही लगेगी। उसी अनुसार 100 प्रतिशत रोजगार स्थानीय लोगों को अकुशल को दिया जायेगा। अर्धकुशल में 70 से 80 प्रतिशत और 40 प्रतिशत प्रबंधन में स्थानीय लोगों को रोजगार दिया जायेगा। धूल धुआं के संबंध में मै फिर से मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ। कि अभी हमारी छोटी सी इकाई स्टाट है 60 टन की है और हम विस्तार के लिए जा रहे है इसमें हम डब्लू.एच.आर. लगायेंगे। और पर्यावरण उन्नयन करेंगे। साथ ही साथ जो अभी 50 मिलीग्राम सामान्य घनमीटर का मानक पालन किया जा रहा है। उसको भी कम करके धूल को 30 मिलीग्राम सामान्य घनमीटर कर दिया जायेगा। तो पर्यावरण पर

और सकारात्मक प्रभाव पडेगा। इसके अलावा जो आप लोगों की मांगे है। उनको जो कंपनी द्वारा अनुशासन दिया गया है सभी को पूर्ण किया जायेगा। लगभग 4:20 बजे प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोकसुनवाई सम्पन्न होने की घोषणा की गई।

लोकसुनवाई स्थल पर लिखित में 137 आवेदन पत्र सुझाव/विचार/टीका –टिप्पणी प्राप्त हुई। स्थल पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को आवेदक से परियोजना पर सूचना/स्पष्टीकरण प्राप्त करने का अवसर दिया गया। लोक सुनवाई के दौरान 42 व्यक्तियों के द्वारा मौखिक सुझाव/विचार/टीका–टिप्पणी एवं आपत्तियां अभिव्यक्त की गई, जिसे अभिलिखित किया गया। लोक सुनवाई में लगभग 150 व्यक्ति उपस्थित थे। उपस्थिति पत्रक पर कुल 48 व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किया गया। आयोजित लोक सुनवाई की वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी कराई गई।

क्षेत्रीय अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय,
छ.ग. पर्यावरण संरक्षण मंडल,
बिलासपुर (छ.ग.)

प्रभारी अतिरिक्त कलेक्टर,
कार्यालय कलेक्टर,
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)